Bharat BoudhIKS

खंड-12

नगर नियोजन और भारतीय वास्तुकला

सनातन ज्ञान : युवा उत्थान

भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित प्रतियोगी परीक्षाओं (नेट और यूपीएससी) के लिए एक संक्षिप्त पुस्तक

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि ।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

देवी सरस्वती को प्रणाम,
जो वर देने वाली और इच्छाओं को पूर्ण करने वाली हैं ।
हे देवी, जब मैं अपने अध्ययन की शुरुआत करूं,
कृपया मुझे हमेशा सही समझ की शक्ति दें ।

Salutations to Devi Saraswati,
the giver of boons and fulfiller of wishes.
O Devi, When I begin my studies,
please bestow on me the capacity of right understanding always

विद्या भारती
उच्च शिक्षा संस्थान
Vidya Bharati
Uchcha Shiksha Sansthan

H-107A, Sector-12, Noida, Gautam Buddha Nagar, (Uttar Pradesh), PIN – 201301
Telephone : 0120-4338616, Mobile: 9999694251

E-mail : vbheducation@gmail.com, contact@vbuss.org
Twitter/Facebook/Instagram : @VBUSSOrg

http://vbuss.org

Drafting Committee / Team

- **Dr. Meenakshi Sharma**
  ACBR, University of Delhi
- **Dr. Mansi Yuvendar Chaudhary**
  Rajdhani College, University of Delhi
- **Dr. Shobhita Singal**
  MLNC, University of Delhi
- **Dr. Deepak Kumar**
  DRC, University of Delhi
- **Ms. Prakshi Soni**
  University of Delhi
- **Mr. Jitender Kumar**
  University of Delhi
- **Ms. Kajal Sharma**
  University of Delhi
- **Ms. Geeta Chaudhary**
  University of Delhi
- **Mr. Pradeep K. Pandey**
  University of Delhi

नगर नियोजन और भारतीय वास्तुकला

Bharat BoudhIKS

भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित प्रतियोगी परीक्षाओं (नेट और यूपीएससी)
के लिए एक संक्षिप्त पुस्तक

विद्या भारती
उच्च शिक्षा संस्थान
सा विद्या या विमुक्तये

किताबवाले
नयी दिल्ली-110002

अस्वीकरण

यह पुस्तक प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराओं से संबंधित विभिन्न शास्त्रीय ग्रंथों, साहित्यिक स्रोतों और सार्वजनिक रूप से उपलब्ध सामग्रियों के अध्ययन एवं उनकी व्याख्या पर आधारित एक विद्वत्तापूर्ण कृति है। यद्यपि इसकी संरचना, विषयवस्तु या प्रवाह में कुछ तत्व पूर्ववर्ती कृतियों अथवा पारंपरिक साहित्य से मेल खा सकते हैं, किन्तु ये समानताएँ केवल संयोगवश हैं और विषय की प्रामाणिकता बनाए रखने के उद्देश्य से रखी गई हैं। हमने यह सुनिश्चित करने का हर संभव प्रयास किया है कि प्रस्तुत सामग्री तथ्यपरक, जानकारीपूर्ण और मूल स्रोतों के प्रति पूर्ण सम्मानभाव से युक्त हो। इस कृति में व्यक्तिगत अनुसंधान, सृजनात्मकता और शैक्षणिक परिश्रम के परिणामस्वरूप नवीन विश्लेषण, अद्यतन व्याख्याएँ, नए विषय, चित्रण और संदर्भ विस्तार सम्मिलित किए गए हैं। मौजूदा स्रोतों से प्राप्त सभी प्रेरणाएँ और संदर्भ पूर्ण सद्भावना एवं शैक्षणिक/ज्ञान-वितरण के उद्देश्य से प्रयोग किए गए हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य किसी भी प्रकार के कॉपीराइट या बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन करना नहीं है। यदि अनजाने में किसी सामग्री से ऐसे किसी अधिकार का अतिक्रमण हुआ हो, तो सूचित किए जाने पर सम्पादक आवश्यक संशोधन या यथोचित स्वीकृति देने को तत्पर है।

© विद्या भारती उच्च शिक्षा न्यास, दिल्ली प्रांत

शीर्षक : **नगर नियोजन और भारतीय वास्तुकला**

सम्पादक : प्रो. राज किशोर शर्मा, जितेन्द्र कुमार

संस्करण : 2025

ISBN : 978-93-49531-88-8

मूल्य : 200/-

प्रकाशक:

किताबवाले

नई दिल्ली-110002

सहयोग:

विद्या भारती

उच्च शिक्षा संस्थान, नोएडा

मुद्रक:

जी.के. फाईन आर्ट प्रेस

पटपड़ गंज, नई दिल्ली

शुभकामना संदेश

प्रिय मित्रों,

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है, साथ ही एक गहरा उत्तरदायित्व भी, कि मैं आपके समक्ष **'भारत बौद्धिक्स'** परियोजना को प्रस्तुत कर रहा हूँ। **भारत बौद्धिक्स विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान** द्वारा प्रारंभ किया गया एक राष्ट्रीय शैक्षिक अभियान है, जिसका मुख्य उद्देश्य हमारे युवाओं को गुणात्मक, सर्वांगीण और समग्र विकास की शिक्षा के साथ-साथ उनके मन और मस्तिष्क में भारत की बौद्धिक और सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित करना है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, विज्ञान, दर्शन, शासन, आरोग्य और कला जैसे अनेक क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परंपराएँ हजारों वर्षों से मानवता का मार्गदर्शन करती रही हैं। आज जब पूरी दुनिया एक संतुलित, नैतिक और समावेशी विकास मॉडल की खोज में है, ऐसे समय में हमारे प्राचीन ग्रंथ और विचार केवल इतिहास की धरोहर नहीं रह गए हैं, बल्कि वे प्रेरणा और नवाचार के जीवंत स्रोत बनकर सामने आ रहे हैं। भारत बौद्धिक्स का प्रयास है कि इस अमूल्य विरासत को आज के विद्यार्थियों के लिए सुलभ, समसामयिक और सार्थक रूप में प्रस्तुत किया जाए।

हमारे विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई **21 पुस्तकों की एक विशेष श्रृंखला,** इस परियोजना का मूल आकर्षण है। जिसे तीन प्रमुख क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है:

1. **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी**: इस खंड में वैदिक गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, धातु विज्ञान, मंदिर वास्तुकला और पारंपरिक पर्यावरण ज्ञान जैसे विषयों के माध्यम से भारत की वैज्ञानिक परंपराओं को उजागर किया गया है।
2. **कला एवं मानविकी**: यह खंड नाट्यशास्त्र, शास्त्रीय भाषाओं, संगीत, साहित्यिक परंपराओं और प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक समृद्धि और सौंदर्यबोध को प्रतिबिंबित करता है।

3. **समाजशास्त्र एवं अर्थनीति**: इसमें राजधर्म, अर्थशास्त्र, कृषि, ग्रामीण उद्योग, और शासन-प्रणाली जैसे विषयों को शामिल किया गया है, जो संतुलित और नैतिक समाज निर्माण की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

इन पुस्तकों के माध्यम से युवाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु हम **23 जनवरी 2026**, नेताजी **सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती** के अवसर पर, एक **राष्ट्रीय परीक्षा** का आयोजन कर रहे हैं। यह परीक्षा पूरे देश के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए खुली होगी। इस परीक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का मूल्यांकन करना नहीं है, बल्कि जिज्ञासा जगाना, आत्मचिंतन को प्रेरित करना, और भारतीय सभ्यता के गौरव के प्रति गर्व की भावना को जागृत करना है।

परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को **राष्ट्रीय भारत बौद्धिक्स कॉन्क्लेव** में आमंत्रित किया जाएगा। यह एक ऐसा मंच होगा जहाँ वे अपने विचार साझा करेंगे, मार्गदर्शकों से संवाद करेंगे और **भारतीय कला एवं समाज** भारतीय ज्ञान प्रणाली के जीवंत अनुभव से जुड़ सकेंगे। **भारत बौद्धिक्स** मात्र एक शैक्षिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह एक **यात्रा है: ज्ञान से बोध की ओर**। यह हमें हमारे मूल से जुड़ने, अपने भविष्य की पुनर्कल्पना करने और भारत की आत्मा को पुनः समझने का अवसर देता है।

मैं देशभर के सभी छात्रों, शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों से हार्दिक आग्रह करता हूँ कि वे इस पुनराविष्कार और परिवर्तन की यात्रा में हमारे सहभागी बनें। आइए, हम मिलकर एक ऐसी पीढ़ी के निर्माण में सहायक बनें, जो बौद्धिक रूप से जागरूक, संस्कृति के प्रति संवेदनशील और वैश्विक दृष्टिकोण से उत्तरदायी हो।

सादर, सस्नेह

प्रो. कैलाश सी. शर्मा

अध्यक्ष, विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान

अध्यक्ष, हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद

पूर्व कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

विषय सूची

प्रस्तावना 9

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान 11

1. भूमिका 13
2. भारतीय वास्तुकला का ऐतिहासिक अवलोकन 16
3. वास्तुकला का विज्ञान – वास्तु-शास्त्र 17
4. दुर्ग विधान - प्राचीन भारत में किलों की वास्तुकला 24
5. वास्तुशास्त्र में नगर योजना 27
6. व्यावहारिक विचार 39
7. सड़क का विन्यास और क्षेत्र विभाजन 40
8. आवासीय वास्तुकला 41

अनुशंसित पठन सामग्री 46

बहुविकल्पीय प्रश्न 48

उत्तरदर्शिका 68

"India is the land of dreams. India had always dreamt - more of the Bliss that is man's final goal. And this has helped India to be more creative in history than any other nation. Hence the effervescence of myths and legends, religions, and philosophies, music, and dances and the different styles of architecture."

(Source: A Survey of Hinduism by - Klaus K. Klostermaier, Page-25)

* * * * *

Friedrich Hegel
(1770-1831)

One of the greatest German philosophers, and an important figure of German Idealism. His major achievement is a distinctive articulation of Idealism. His Historicist and Idealist account of the total reality as a whole revolutionized European philosophy. His philosophical works provided the theoretical frameworks and conceptual blueprints which were influential in the creation and formation of government structures. Hegel influenced many thinkers and writers, such as Theodor W. Adorno, Karl Barth, Bauer, Karl Marx, Bosanquet, Bradley Simone de Beauvoir, Judith Butler, Benedetto Croce, Jacques Derrida, Friedrich Engels, Ludwig Feuerbach, Paul Charles Aymard Sartre, Giovanni Gentile, Søren Aabye Kierkegaard Herbert Marcuse et al.

प्रस्तावना

नगर नियोजन और शहरी विकास का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है, जो कि विभिन्न सभ्यताओं में अपनी अनूठी विशेषताओं के साथ विकसित हुआ है। विशेष रूप से, भारतीय नगर नियोजन की परंपरा अत्यधिक व्यवस्थित और वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित रही है। यह पुस्तक नगर नियोजन और वास्तु-शास्त्र के प्राचीन भारतीय सिद्धांतों पर केंद्रित है, जो आधुनिक शहरी विकास के लिए भी प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं। प्राचीन भारत में नगर नियोजन की अवधारणा का उल्लेख विभिन्न ऐतिहासिक ग्रंथों में मिलता है। अर्थशास्त्र और कौटिल्य के लेखों में नगरों के विभाजन, भूमि उपयोग, सड़क व्यवस्था और नागरिक सुविधाओं का विस्तृत वर्णन किया गया है। सिंधु-सरस्वती सभ्यता के पुरातात्त्विक साक्ष्य दर्शाते हैं कि हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और धोलावीरा जैसे नगरों में अत्यधिक उन्नत जल निकासी प्रणाली, सुव्यवस्थित सड़कें, तथा नागरिक सुविधाओं की योजनाबद्ध व्यवस्था थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारत में नगर नियोजन केवल भौतिक संरचना तक सीमित न रहकर सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखता था। भारतीय वास्तुकला में वास्तु-शास्त्र का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह शास्त्र न केवल इमारतों और नगरों के निर्माण के नियमों को परिभाषित करता है, बल्कि प्राकृतिक तत्वों के साथ संतुलन स्थापित करने पर भी बल देता है। वास्तु-पुरुष-मंडल, पंच-भूत तत्व, तथा दिशाओं के अनुरूप भवन निर्माण के सिद्धांत आधुनिक वास्तुकला और शहरी नियोजन के लिए भी प्रासंगिक हैं। इस पुस्तक में प्राचीन भारतीय नगर नियोजन के सिद्धांतों, वास्तु-शास्त्र की अवधारणाओं, ऐतिहासिक नगरों की विशेषताओं और शहरी विकास की प्रक्रिया को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन न केवल इतिहास के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक होगा, बल्कि समकालीन शहरी नियोजन और वास्तुकला के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। यह पुस्तक नगर नियोजन, वास्तुकला, और ऐतिहासिक अध्ययन में रुचि रखने वाले पाठकों, शोधकर्ताओं, तथा योजनाकारों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ साबित होगी।

"In the Indian ancient scriptures, the idea of man is quite illimitable and sublime. He is at length lost in the Supreme Entity himself."

Source: The Writings of Henry D. Thoreau - Walden

* * * * *

Henry David Thoreau
(1817-1862)

Great American essayist, poet, philosopher, and historian. He met Ralph Waldo Emerson and followed Transcendentalism advocated by him. Thoreau was also a devout abolitionist, who constantly attacked the Fugitive Slave Law. He wrote volumes of books, articles, essays, journals and poetry, and is remembered for his writings on natural history and philosophy. His philosophy of Civil disobedience had an impact on the political ideologies and actions of successive generations of great icons, such as, Leo Tolstoy, William Butler Yeats, Bernard Shaw, Ernest Hemingway, Walt Whitman, Mahatma Gandhi, Martin Luther King, John Kennedy.

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान (VBUSS) भारतीय परंपराओं में निहित एक समग्र, मूल्य-आधारित ढांचे के अंतर्गत शैक्षणिक उत्कृष्टता, चरित्र निर्माण और राष्ट्र-निर्माण पर बल देते हुए गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। **"सा विद्या या विमुक्तये"** - अर्थात् "वह ज्ञान जो मुक्त करता है" - इस प्रेरणादायक ध्येय वाक्य से संचालित होकर, VBUSS ऐसी पीढ़ी के निर्माण का संकल्प करता है जो न केवल शैक्षणिक दृष्टि से दक्ष हो, अपितु सामाजिक रूप से उत्तरदायी एवं आध्यात्मिक रूप से जागरूक भी हो।

संस्थान उच्च शिक्षा के मूल तत्वों के रूप में समालोचनात्मक चिन्तन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नैतिक जीवन और गहन सांस्कृतिक समझ को प्रमुखता प्रदान करता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में विस्तृत शैक्षणिक तंत्र के माध्यम से VBUSS ने उल्लेखनीय प्रभाव डाला है। यह संस्था अनेक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों, डिग्री संस्थानों तथा व्यावसायिक केन्द्रों का संचालन कर, देश में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता तथा उपलब्धता को सुदृढ़ करने का कार्य कर रही है।

उपलब्धियों की दृष्टि से भी VBUSS ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रशंसनीय प्रगति की है। संस्थान ने सम्पूर्ण भारत में महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों का एक सुदृढ़ तंत्र स्थापित किया है, जो विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में शैक्षणिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। कठोर पाठ्यक्रमों और अनुसंधान पहलों के माध्यम से निरंतर शैक्षणिक उत्कृष्टता को सुनिश्चित करते हुए, इसने शिक्षा क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु मान्यता प्राप्त की है।

विद्या भारती ने वंचित समुदायों को शिक्षा उपलब्ध कराकर सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने में भी सक्रिय भूमिका निभाई है, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच का अंतर कम हुआ है। इसके पूर्व छात्र विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं, जो विद्या भारती की शिक्षा-नीति की प्रभावशीलता को सुदृढ़ करते हैं।

अपने सतत प्रयासों द्वारा VBUSS भारत के भविष्य को कुशल, ज्ञानसम्पन्न एवं नैतिक नेतृत्व प्रदान कर रहा है। आधुनिक शैक्षणिक विषयों का प्राचीन भारतीय ज्ञान से समन्वय कर, VBUSS राष्ट्र के प्रति समर्पित, जिम्मेदार और जागरूक नागरिकों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

VBUSS प्राचीन भारतीय ज्ञान को पुनः जागृत कर समकालीन शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने के राष्ट्रीय आंदोलन में अग्रदूत के रूप में प्रतिष्ठित है। प्रस्तुत पुस्तक इस महान अभियान में एक विनम्र योगदान है। यह भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख विचारों, दार्शनिक अवधारणाओं एवं विभिन्न शास्त्रों को एक सुलभ एवं विचारोत्तेजक स्वरूप में संकलित करता है।

नगर नियोजन और भारतीय वास्तुकला

भूमिका

प्राचीन भारत की शहरी योजना और मंदिर वास्तुकला, जो अर्थशास्त्र, बृहत्संहिता, मयमतम् और समराङ्गणसूत्रधार जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों से प्रेरित थी, केवल उपयोगितावादी बस्तियों से कहीं आगे थी। प्राचीन भारतीय नगरों को ब्रह्मांडीय व्यवस्था, प्राकृतिक तत्वों और सामाजिक उद्देश्यों के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से डिज़ाइन किया गया था, जिससे वे जीवंत पारिस्थितिक तंत्र बन गए थे। इन सभ्यताओं ने वैज्ञानिक सटीकता, कलात्मक संवेदनशीलता और आध्यात्मिक दृष्टिकोण का गहन समन्वय किया, जो आधुनिक शहरीकरण की चुनौतियों के साथ आज भी प्रासंगिक है।

अजमेर जैन मंदिर में स्वर्ण नक्काशी द्वारा प्रदर्शित पौराणिक अयोध्या

शहरी परिदृश्य को पेशे, जाति और नागरिक भूमिकाओं के अनुसार कार्यात्मक क्षेत्रों में सावधानीपूर्वक विभाजित किया गया था। राजा का महल और मंदिर शहर के केंद्र में रणनीतिक रूप से स्थित थे, जो शासन और आध्यात्मिकता के संगम का प्रतीक थे। सड़कें मानकीकृत आयामों का पालन करती थीं-मुख्य मार्ग 54 फीट चौड़े और पैदल मार्ग 3 से 6 फीट के-जो सूर्य के प्रकाश, वायु परिसंचरण और सुगम्यता के लिए दिशाओं के अनुसार संरेखित थे। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और धोलावीरा में खुदाई से योजनाबद्ध ग्रिड लेआउट, भूमिगत जल निकासी, सार्वजनिक अन्नागार, जलाशय और स्नानागारों का पता चलता है, जो प्रभावशाली नागरिक दूरदर्शिता को उजागर करता है।

इस योजना परंपरा के मूल में वास्तुशास्त्र-जिसे शिल्पशास्त्र या वास्तुविद्या भी कहा जाता है-स्थित है, जो मानव निर्मित वातावरण को सार्वभौमिक ऊर्जा के साथ संरेखित करने का एक पवित्र वास्तु विज्ञान है। इसकी नींव वास्तुपुरुषमंडल पर आधारित है, जो ज्यामितीय संरेखण के माध्यम से स्थानिक सामंजस्य सुनिश्चित करने वाला एक ब्रह्मांडीय आरेख है। वास्तु के आठ मूलभूत अंग-स्थल चयन और निर्माण अनुष्ठानों से लेकर सामग्री विज्ञान, कारीगर कौशल और सजावटी कला तक-सतत और सार्थक स्थानों के लिए एक समग्र ढांचा बनाते हैं।

मंदिर वास्तुकला इस समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है, विशेष रूप से नागर (उत्तर भारतीय) और द्रविड़ (दक्षिण भारतीय) शैलियों में। मंदिरों को ब्रह्मांड के सूक्ष्म रूप में डिज़ाइन किया गया था, जिसका केंद्र गर्भगृह (संस्थान) था, जिसे मंडप, प्राकार और आरोही शिखर या विमान द्वारा घेरा जाता था, और स्तूपि द्वारा मुकुटित किया जाता था। मूर्तिकला के नियम देवताओं के दिव्य अनुपात सुनिश्चित करते थे, जिससे सौंदर्यात्मक सुंदरता और आध्यात्मिक शक्ति का संतुलन बना रहता था।

यह पुस्तक पाठकों को प्राचीन भारत की शहरी और मंदिर योजना को स्थिर अवशेषों के रूप में नहीं, बल्कि पारिस्थितिक ज्ञान, सांस्कृतिक समृद्धि और आध्यात्मिक अखंडता के गतिशील मॉडल के रूप में पुनः खोजने के लिए आमंत्रित करता है-जो भविष्य के लिए स्थायी, समावेशी और आत्मा-पोषक शहरों के निर्माण के लिए कालातीत खाके प्रदान करता है।

प्रभावी नगर नियोजन और संतुलित शहरी विकास का मुख्य आधार जोनिंग और भूमि उपयोग पर आधारित होता है। ये अवधारणाएँ प्राचीन भारतीय नगर नियोजन का केंद्रीय तत्व हैं, जैसा कि अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों और कौटिल्य द्वारा लिखित कृतियों में

उल्लेखित है, जो किलेबंदी वाले नगरों का विस्तृत वर्णन प्रदान करते हैं इन ग्रंथों में नगर को विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित करने का उल्लेख किया गया है, जिनका प्रत्येक वर्ग विशेष सामाजिक वर्ग (वर्ण) और कार्यों से संबंधित होता है।

प्राचीन भारतीय नगरों की प्रमुख विशेषताएँ, जैसा कि कौटिल्य द्वारा बताया गया है, वे हैं:

- राजमहल ने कुल क्षेत्रफल का एक-नौवां हिस्सा घेर लिया था, जो केंद्र के थोड़ा उत्तर में स्थित था।
- नगर में तीन शाही सड़कें थीं, जो पूर्व-पश्चिम और उत्तर-पूर्व दिशा में चलती थीं, और इसे 12 द्वारों से घेर लिया गया था।
- सुगंधित पदार्थों, द्रव्यों और माला बनाने वाले व्यापारी पूर्वी दिशा में रहते थे, साथ ही क्षत्रिय (योद्धा वर्ग) भी।
- उत्तर क्षेत्र में राज शिक्षक, पुजारी और मंत्री रहते थे, जबकि पश्चिमी क्षेत्र कारीगरों, शिल्पकारों और शूद्रों (कार्यकर्ता वर्ग) के लिए निर्धारित था।
- उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम कोने में प्रशासनिक कार्यालय, गोदाम और निर्माण सुविधाएँ थीं।
- गिल्ड और निगम नगर के कोनों में स्थित थे, जबकि मंदिर मध्य में स्थित थे।
- कौटिल्य के ग्रंथों में विभिन्न सड़कों की चौड़ाई के बारे में भी विशिष्ट विवरण दिए गए हैं, जैसे: शाही सड़कें, गाँव की सड़कें और बागों या जंगलों को जाने वाली सड़कें 54 फीट चौड़ी होनी चाहिए।
- सैन्य गोदामों और अंतिम संस्कार की जगहों को जाने वाली सड़कें थोड़ी संकरी होती थीं, जिनकी चौड़ाई 48 फीट थी।
- हाथियों और रथों के लिए सड़कें 12 फीट और 7.5 फीट चौड़ी होती थीं।
- पशुओं या पैदल यात्रियों के लिए छोटी सड़कें सिर्फ 6 फीट और 3 फीट चौड़ी होती थीं।

(Source: Shamasastry, R. (1929). "Kautilya's Arthaśāstra", 3rd ed., The Wesleyan Mission Press, Mysuru, pp. 53-57. Rangarajan, L.N. (1987). "Kautilya-The Arthashastra", Penguin Books, New Delhi, p. 192.)

सिंधु-सारस्वती सभ्यता (लगभग 2600 ईसा पूर्व) के पुरातात्विक साक्ष्य से यह संकेत मिलता है कि प्राचीन नगर अच्छी तरह से नियोजित थे, जिनमें शहरी अवसंरचना और संगठन पर जोर दिया गया था। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और इस सभ्यता के अन्य स्थलों पर खुदाई से शहरी नियोजन के उन्नत प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

भारतीय वास्तुकला का ऐतिहासिक अवलोकन

भारत के कई प्राचीन स्मारकों का रखरखाव भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा किया जाता है। धोलावीरा, लोथल, हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे प्रमुख स्थलों पर खुदाई ने अत्यधिक व्यवस्थित शहरी प्रणालियाँ प्रकट कीं। 20वीं सदी की शुरुआत में भारतीय पुरातत्वविदों दया राम साहनी और राकल दास बनर्जी द्वारा की गई व्यवस्थित खुदाई ने इन प्राचीन नगरों का पता लगाया। इन स्थलों पर कुछ उल्लेखनीय शहरी विशेषताएँ हैं:

- कार्डिनली, उन्मुख सड़कों, मजबूत किलाबंदी, विशिष्ट क्षेत्रों, सामुदायिक हॉल और विशिष्ट उत्पादन क्षेत्र जैसे तांबे और कांस्य भट्ठियाँ, हथियार और आभूषण कार्यशालाएँ और शिल्प कार्यशालाएँ।
- धोलावीरा, जो कच्छ के रण में स्थित है, 48 हेक्टेयर में फैला हुआ था और इसमें एक उन्नत जल प्रबंधन प्रणाली थी। नगर में वर्षा जल संचयन नालियाँ और बांध थे जो निकटवर्ती नदियों से मौसमीय पानी को बड़े जलाशयों में मोड़ने के लिए बनाए गए थे।
- हड़प्पा, जिसका क्षेत्रफल 25 हेक्टेयर था, में निर्माण के लिए मानकीकृत ईंटों का उपयोग किया गया था, जिसमें ऊपरी मंजिलों के लिए बड़ी ईंटें और लकड़ी की छतें घास या पत्तों से ढकी हुई थीं। नगर में एक जटिल जल निकासी प्रणाली थी, जिसमें व्यक्तिगत स्नानागार और कमरे केंद्रीय आंगनों के चारों ओर व्यवस्थित थे।
- मोहनजोदड़ो अपने स्मारकीय संरचनाओं के लिए जाना जाता है, जैसे कि महान स्नानागार, जो उन्नत वास्तुकला और इंजीनियरिंग कौशल को प्रदर्शित करता है। स्नानागार की केंद्रीय बेसिन को कसकर फिट की गई ईंटों से ढका गया था और इसे जलरोधक बनाने के लिए जिप्सम प्लास्टर और बिटुमिन से सील किया गया था। इसके अतिरिक्त, मोहनजोदड़ो में भूमिगत सीवेज सिस्टम, अनाज गोदाम और बड़े सार्वजनिक जलाशय थे।

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में जल निकासी व्यवस्था और महान स्नानागार खुदाई के दौरान प्राप्त हुए।

- बौद्ध और मौर्य काल के दौरान, वास्तुकला और शहरी विकास का निरंतर विकास हुआ। संकीर्ण और राहत चित्रों में, जैसे कि साँची, उस समय के शहरी नियोजन प्रथाओं का प्रमाण मिलता है। ग्रीक इतिहासकार मेगस्थनीज, जिन्होंने लगभग 300 ईसा पूर्व भारत का दौरा किया, ने पाटलिपुत्र (मौर्य राजधानी) की किलाबंदी वाले नगर का वर्णन किया, जिसमें 564 मीनारें और 64 द्वार थे, जो वहाँ के उन्नत नियोजन और किलाबंदी को दर्शाते हैं।

वास्तुकला का विज्ञान – वास्तु-शास्त्र

वास्तु-शास्त्र प्राचीन भारतीय वास्तुकला का विज्ञान है, जो भवनों, जैसे मंदिरों, आवासीय घरों और सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे के निर्माण, डिज़ाइन और नियोजन से संबंधित है। इसे अक्सर वास्तु-विज्ञान या शिल्प-शास्त्र कहा जाता है, जो कार्यात्मक और सौंदर्यपूर्ण रूप से आकर्षक संरचनाओं के निर्माण में कलात्मक और वैज्ञानिक सिद्धांतों को जोड़ता है। यह भवनों के प्राकृतिक तत्वों-विशेष रूप से पाँच प्राथमिक तत्वों (पंच-भूत)- के साथ-साथ सूर्य, चंद्रमा और ग्रहों की आकाशीय गति के अनुरूप संरेखण को निर्देशित करता है। समकालीन दृष्टिकोण से, वास्तु-शास्त्र वास्तुकला के क्षेत्र से संबंधित है।

वास्तु के प्रमुख तत्व

वास्तु-शास्त्र में चार आवश्यक घटक होते हैं–

1. भूमि – पृथ्वी या भूमि
2. प्रासाद – मंदिर या महल
3. यात्रा – परिवहन
4. शयन – शयनकक्ष या बिस्तर

ये तत्व वास्तुकला डिज़ाइन प्रक्रिया में अभिन्न होते हैं, ताकि निर्मित वातावरण अपने प्राकृतिक और ब्रह्मांडीय परिवेश के साथ सामंजस्यपूर्ण हो।

वास्तु-शास्त्र के प्रमुख क्षेत्र

1. नागरिक वास्तुकला

यह विभिन्न संरचनाओं जैसे शाही महल, विभिन्न सामाजिक वर्गों के आवासीय घर, किले, सार्वजनिक भवन (जैसे बैठक हॉल, पुस्तकालय, स्वास्थ्य केंद्र) और अन्य नागरिक बुनियादी ढाँचे के डिज़ाइन और निर्माण से संबंधित है।

2. मंदिर वास्तुकला

यह मंदिरों के डिज़ाइन और संरचना पर केंद्रित है, जिसमें मंडप (स्तंभित हॉल), गर्भगृह (सांक्टम सैंटोरम), शिखर (चोटी) और स्तूप (गुम्बद) जैसी संरचनाएँ शामिल हैं। इसमें मूर्तिकला भी शामिल है मंदिरों में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाना और स्थापित करना।

3. कलात्मक निर्माण

यह भवनों के सौंदर्य डिज़ाइन तत्वों से संबंधित है, जिसमें चित्रकला, मूर्तिकला और फर्नीचर शामिल हैं। इसमें गैर-धार्मिक कलात्मक वस्तुएं जैसे सोने के बिस्तर और दरवाजे भी शामिल हैं।

4. अन्य वास्तुशास्त्रीय विचार

वास्तु-शास्त्र में अतिरिक्त विषयों में प्रमुख वास्तुकार (स्थपति) और उनकी टीम की योग्यताएँ, निर्माण सामग्री का चयन और स्थान नियोजन ढांचा शामिल है जिसे वास्तु-पुरुष-मंडल कहा जाता है, जो सभी प्रकार की वास्तुकला नगर नियोजन, मंदिर डिज़ाइन और नागरिक अभियंत्रण पर लागू होता है।

वास्तु-शास्त्र के साहित्यिक स्रोत

वास्तु-शास्त्र का उल्लेख विभिन्न प्राचीन ग्रंथों में किया गया है, जिनमें वैदिक साहित्य, महाकाव्य, पुराण, ब्राह्मण, आगम, सूत्र और शिल्प-शास्त्र शामिल हैं। कुछ प्रमुख संदर्भों में शामिल हैं:

- **शांकायन-गृह्य-सूत्र**, जो भवन निर्माण से संबंधित अनुष्ठानों का वर्णन करता है।
- **अग्नि-पुराण** (अध्या. 21-106, 263-272, 317-326), जो वास्तु-शास्त्र के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करता है।
- **रामायण**, जो अयोध्या नगर में तीन प्रकार के घरों का वर्णन करता है: प्रासाद (शाही महल), हरम्य (राजसी हवेलियाँ), और विमान (बहु-मंजिला इमारतें)।
- **अर्थशास्त्र**, जो वास्तु को घरों, खेतों, बगानों और बुनियादी ढाँचे के रूप में व्यापक रूप से परिभाषित करता है।
- **दुर्गविधान**, जो किले के निर्माण पर केंद्रित है।

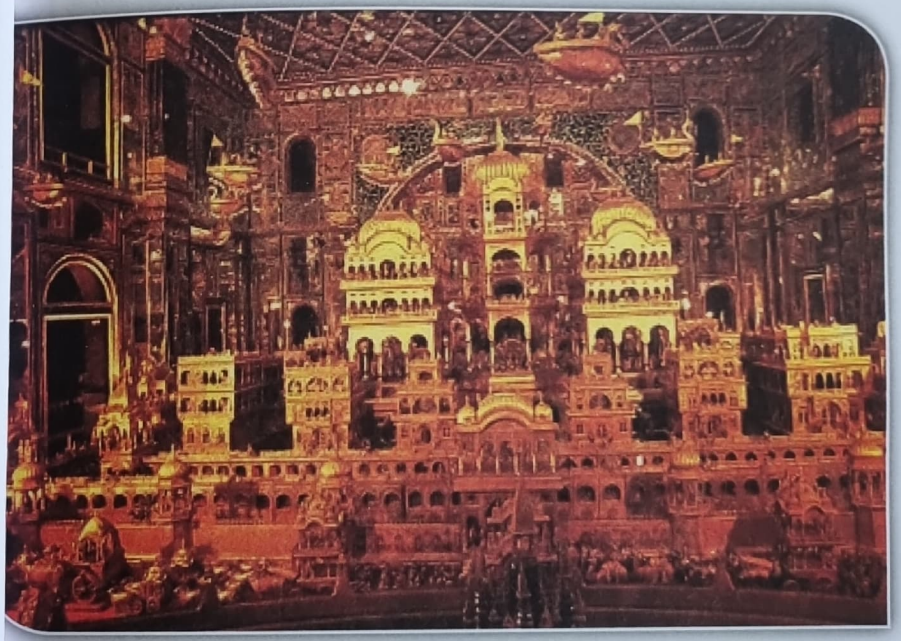

अजमेर जैन मंदिर में स्वर्ण नक्काशी द्वारा प्रदर्शित पौराणिक अयोध्या

अयोध्या और लंका के नगर: शहरी वैभव के साहित्यिक चित्रण

रामायण प्राचीन भारत की नगर योजना और वास्तुकला के प्रारंभिक और जीवंत साहित्यिक चित्रण प्रस्तुत करता है। बालकांड में, वाल्मीकि अयोध्या नगर का वर्णन करते हैं, जो इक्ष्वाकु वंश की राजधानी थी। यह नगर 12 योजन लंबा और 3 योजन चौड़ा था। नगर की संरचना अष्टापद पैटर्न पर आधारित थी, जिसमें शाही महल के चारों ओर गहरी खाइयाँ और चौड़ी सड़कें थीं। यह एक सममित नगर था, जिसमें कमानदार बाहरी द्वार, सुव्यवस्थित बाजार और समतल भूमि पर पंक्तिबद्ध आवासीय क्षेत्र थे, जिससे भूमि का प्रत्येक इंच उद्देश्यपूर्ण रूप से उपयोग किया गया था। अयोध्या को शतघ्नियों (प्राचीन मिसाइलों), झंडों, उद्यानों और वृक्ष-पंक्तिबद्ध मार्गों से सुसज्जित किया गया था। इसकी सड़कें राजगृह जैसे अन्य महत्वपूर्ण नगरों से जुड़ी थीं, जो एक नेटवर्कयुक्त शहरी प्रणाली का संकेत देती हैं। शिल्पियों, शस्त्रागारों और सुव्यवस्थित महलों की उपस्थिति से यह स्पष्ट होता है कि समाज ने रक्षा और सौंदर्य दोनों को महत्व दिया, जो क्षेत्रीकरण, पैमाने और नागरिक व्यवस्था की समझ से निर्देशित था।

इसके विपरीत, लंका—रावण की द्वीपीय राजधानी—सुंदरकांड में एक दिव्य नगर के रूप में वर्णित है, जिसे देव शिल्पी विश्वकर्मा ने बनाया था। हनुमान की यात्रा के दौरान, वह इस नगर का अद्भुत दृश्य देखते हैं। पर्वत की चोटी पर स्थित लंका में स्वर्णिम और सफेद रंग की अट्टालिकाएँ थीं, जो सात या आठ मंजिल ऊँची थीं, और आकाश में बादलों या तारों के समान प्रतीत होती थीं। नगर में चौड़ी सड़कें थीं, जो झंडों, तोरणों और फूलों की बेलों से सुसज्जित थीं। पक्षियों की चहचहाहट और क्रिस्टल कणों से सुसज्जित आंगनों की उपस्थिति से नगर की जीवंतता प्रकट होती थी। लंका की वास्तुकला प्रशासनिक और आवासीय आवश्यकताओं के साथ-साथ मनोरंजन, कला और रक्षा की आवश्यकताओं को भी पूरा करती थी। नगर में रथों के लिए स्थान, चित्र दीर्घाएँ, कृत्रिम पहाड़ियाँ, मनोरंजन कक्ष, विशाल शस्त्रागार और खजाने थे—सभी सुरक्षात्मक प्राचीर, खाइयों और लोहे की कंटीली बाड़ों से घिरे हुए थे।

यद्यपि इन वर्णनों में काव्यात्मक अलंकरण है, वे प्राचीन भारत की वास्तुकला की कल्पना में अमूल्य सांस्कृतिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं—जहाँ नगरों को ब्रह्मांडीय व्यवस्था, राजनीतिक शक्ति और सौंदर्य आनंद के प्रतिबिंब के रूप में डिज़ाइन किया गया था। (Source: https://www.valmiki.iitk.ac.in/)

- **बृहतसंहिता,** (6वीं शताब्दी ईस्वी) द्वारा वराहमिहिर, जो मंदिर डिज़ाइन, मूर्ति निर्माण और स्थापना प्रक्रिया पर अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करता है। विशेष अध्याय (54 और 56) शिल्प-शास्त्र और मंदिर संरचनाओं की विशेषताएँ बताते हैं।
- **वास्तु-पुरुष-मंडल,** वास्तु-पुरुष की अवधारणा पारंपरिक भारतीय वास्तुकला में केंद्रीय है, जो प्रस्तावित संरचना के स्थल के लिए एक खाका प्रस्तुत करती है। गरुड़ पुराण के अनुसार, आदर्श व्यवस्था में वास्तु-पुरुष का सिर उत्तर-पूर्व में, पैर दक्षिण-पश्चिम में और हाथों को दक्षिण-पूर्व और उत्तर-पश्चिम कोने में रखा जाता है। वास्तु-मंडल का केंद्र ब्रह्मा-स्थल के रूप में जाना जाता है एक पवित्र स्थान जो ब्रह्मांडीय ऊर्जा के अनुरूप होता है। यह संरेखण संरचना को प्राकृतिक और आकाशीय बलों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में मदद करता है। मंदिर वास्तुकला में, गर्भगृह (संक्तम सैंटोरम) ब्रह्मा-स्थल पर स्थित होता है। वास्तु-पुरुष-मंडल का आकार सामान्यत: वर्गाकार होता है, और इसका उपयोग नगरों, मंदिरों और अन्य वास्तुकार परियोजनाओं के डिज़ाइन और लेआउट को मार्गदर्शन करने के लिए किया जाता है।

वास्तु-शास्त्र के आठ अंग

वास्तु-शास्त्र में आठ महत्वपूर्ण घटक होते हैं जिन्हें "आठ अंग" कहा जाता है जो वास्तुकला के कार्यों को बनाने के लिए मार्गदर्शन करते हैं, ताकि वे सामंजस्यपूर्ण, टिकाऊ और आध्यात्मिक रूप से सुसंगत हों। इन तत्वों में व्यावहारिक और आध्यात्मिक दोनों पहलुओं पर विचार किया जाता है, जिनमें निर्माणकर्ता से लेकर उपयोग किए गए सामग्री तक का ध्यान रखा जाता है।

1. याजमान (मालिक)

याजमान वह व्यक्ति होता है जो निर्माण का आदेश देता है और परियोजना की सफलता और समृद्धि में केंद्रीय भूमिका निभाता है। मालिक का कर्तव्य होता है कि वह निवासियों के लिए एक शांतिपूर्ण और समृद्ध वातावरण प्रदान करे। इसमें व्यक्ति की कुंडली, वर्ण (सामाजिक वर्गीकरण), पेशा और यहां तक कि मानव शरीर के मापों (एंथ्रोपोमेट्रिक्स) का गहन विचार करना शामिल है। उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि भवन का डिज़ाइन मालिक की आध्यात्मिक और भौतिक आवश्यकताओं के अनुरूप हो।

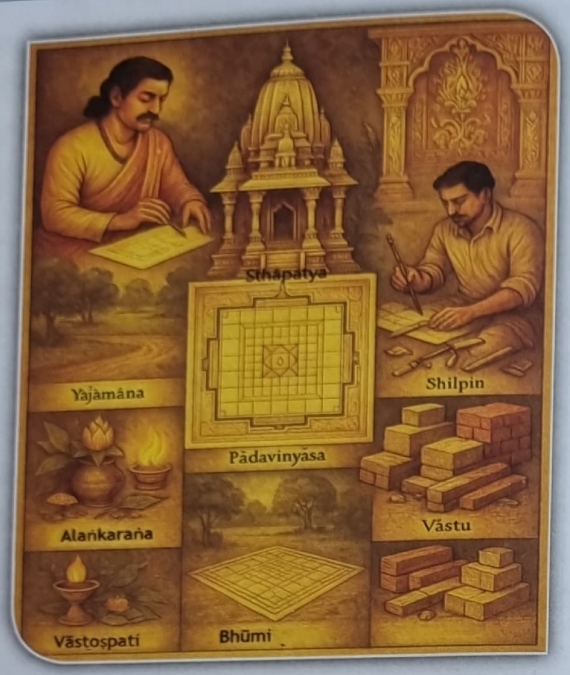

वास्तु-शास्त्र के आठ अंग

2. स्थापत्य (वास्तुकला)

स्थापत्य उस संरचना के समग्र वास्तुशिल्प डिज़ाइन और योजना को संदर्भित करता है। इसमें विस्तृत विशिष्टताओं और लागत अनुमानों से लेकर अद्वितीय वास्तुशिल्प शैलियों के डिज़ाइन तक शामिल है। वास्तु-शास्त्र के ग्रंथों में यह अनुशंसा की जाती है कि एक घर को आदर्श रूप से लगभग 200 वर्षों तक रहना चाहिए, जबकि शाही महल कम से कम 600 वर्षों तक चलने चाहिए। आदर्श वास्तुशिल्प शैली दिव्य मानी जाती है, और वास्तुकारों (शिल्पी) को अपनी डिज़ाइनों को इस दिव्य आदर्श पर आधारित करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

3. शिल्पिन (तकनीकी विशेषज्ञ)

शिल्पिन वे कुशल कारीगर और श्रमिक होते हैं जो वास्तुशिल्प योजनाओं को साकार करते हैं। मायामता के अनुसार, निर्माण प्रक्रिया में शामिल शिल्पियों के चार प्रमुख प्रकार होते हैं:

- **स्थपति (मुख्य वास्तुकार)**: रचनात्मक दृष्टि के लिए जिम्मेदार, स्थापित शास्त्रों में अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करते हुए डिज़ाइन और निर्माण को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इसमें गणित, ज्योतिष, वेदों और समय एवं अंतरिक्ष मापने के विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान शामिल है।
- **सूत्रग्राही**: निर्माण के दौरान सही अनुपात को मापने और बनाए रखने के लिए जिम्मेदार।
- **वर्धकी**: निर्माण परियोजना के विकास और विस्तार में शामिल, गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित करते हैं।
- **तक्षक**: लकड़ी के काम और बढ़ईगीरी में विशेषज्ञ, भवन के महीन विवरणों को तैयार करते हैं।

4. भूमि (भूमि)

भूमि उस स्थान को संदर्भित करती है जिस पर संरचना बनाई जानी है। सम्रांगण सूत्रधारा के अनुसार, निर्माण शुरू होने से पहले स्थल की उपयुक्तता का मूल्यांकन किया जाना चाहिए, जिसमें मिट्टी की स्थिति (भूमि-परिक्षा) का विश्लेषण भी शामिल है। ग्रंथ भूमि को तीन प्रकारों में वर्गीकृत करते हैं:

- **जांगल**: जंगली या खुरदरी भूमि।
- **अनूप**: दलदल या निचले क्षेत्र।
- **साधारण**: सामान्य, स्थिर भूमि।

5. वास्तोष्पति (अर्पण)

किसी भी निर्माण से पहले देवताओं और आत्माओं को अर्पण और पूजन किए जाते हैं ताकि परियोजना की सफलता और सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। इन अर्पणों को वास्तु-पूजन और बलि-दान कहा जाता है, जो देवताओं और आत्माओं को शांत करने के लिए किए जाते हैं, ताकि वे निर्माण प्रक्रिया में हस्तक्षेप न करें। कुछ महत्वपूर्ण अनुष्ठान में शामिल हैं:

- **भूमि-पूजन:** भूमि की पूजा और निर्माण लेआउट को अंतिम रूप देना।
- **गृहारंभ:** पत्थर रखने का समारोह और निर्माण की शुरुआत।
- **गृहप्रवेश:** संपन्न घर में पहला प्रवेश (घर का उद्घाटन)।

6. पादविन्यास (स्थल लेआउट)

पादविन्यास वह लेआउट है जो प्रस्तावित स्थल का विन्यास करता है। ग्रंथ जैसे मायामतम और मानसार घरों और इमारतों के लेआउट को व्यवस्थित करने के लिए विस्तृत मॉडल प्रदान करते हैं।

7. वास्तु (सामग्री)

सामग्री का चयन और प्रसंस्करण वास्तु-शास्त्र का एक अभिन्न अंग है। विभिन्न सामग्री, जैसे पत्थर, लकड़ी और धातु, उनके गुणवत्ता, रंग और उपयुक्तता के आधार पर ध्यान से चुनी जाती हैं।

8. अलंकरण (संसोधन और सजावट)

अलंकरण आंतरिक और बाहरी डिज़ाइन के साथ-साथ मरम्मत और संशोधन पर केंद्रित है। इसमें द्वारों को आर्चवे डिज़ाइनों से सजाना, सजावटी तत्वों जैसे दीवार उकेरने और छतों पर भित्ति चित्रों की रचना शामिल है।

दुर्ग विधान - प्राचीन भारत में किलों की वास्तुकला

प्राचीन भारत में दुर्ग निर्माण की विद्या, जिसे दुर्ग विधान कहा जाता है, वास्तुशास्त्र और नगर नियोजन की गहन समझ को दर्शाती है। दुर्ग केवल रक्षणात्मक संरचनाएँ नहीं थे, बल्कि वे राज्य की शक्ति, सांस्कृतिक विरासत और धर्मनिष्ठ नगरों का केंद्र बिंदु थे।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र (पुस्तक 2, अध्याय 3) के अनुसार, एक आदर्श दुर्ग को भूगोल, रक्षा प्रणाली और नागरिक जीवन को ध्यान में रखकर निर्मित किया जाना चाहिए। (स्रोत: कौटिल्य का अर्थशास्त्र, आर. शमशास्त्री, 1915)

मुख्य स्थापत्य तत्त्व

कौटिल्य द्वारा निर्दिष्ट दुर्ग के प्रमुख तत्त्व निम्नलिखित हैं:

- **परिखा (Parikhā):** गहरी जल-भरी खाई, जो सुरंग खोदने या सीधा आक्रमण करने से रोकती है।
- **प्राकार (Prākāra):** मोटी पत्थर या ईंट की दीवारें, जिनमें बुर्ज और प्रहरी मीनारें होती थीं।

- **गुप्त प्रवेश (Gupta Praveśa):** आपातकालीन पलायन और छुपे हमलों हेतु भूमिगत मार्ग।
- **बाह्यगृह (Bahya-Griha):** शस्त्र भंडारण, सैनिकों के आवास, और आपूर्ति गोदाम।
- **अन्तःपुर** (Antahpura): राजपरिवार के निवास हेतु आंतरिक क्षेत्र, जिसमें उद्यान व मंदिर सम्मिलित होते थे।

ये सभी विशेषताएँ वास्तु शास्त्र में उल्लिखित कोस्मिक संतुलन और ब्रह्मस्थल की अवधारणाओं के अनुसार विन्यस्त होती थीं।

- **दुर्गों के प्रकार (दुर्ग भेद)**

अर्थशास्त्र, मनुस्मृति, और सामराङ्गण सूत्रधार में दुर्गों को 6 प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

1. जल दुर्ग (Jala Durga)

"आप्लाव्य जलदुर्गाणि जलनिधिपरिक्षिप्तानि च।"

- मनुस्मृति, अध्याय 7

- **महत्त्व:** जल को रक्षा अवरोध व संसाधन के रूप में उपयोग करना।
- **उदाहरण:** मुरुद-जंजीरा दुर्ग, महाराष्ट्र

2. गिरी दुर्ग (Giri Durga)

"सर्वेषु दुर्गेषु गिरी दुर्गं श्रेष्ठतमम्।"

- सामराङ्गण सूत्रधार, अध्याय 66

Source: Gupta, P. (2005). Structural Elements of Forts in Indian History. Journal of South Asian Archaeology, 22(3), 145-167.

- **महत्त्व:** ऊँचाई से रणनीतिक श्रेष्ठता व भय का मनोवैज्ञानिक प्रभाव।
- **उदाहरण:** चित्तौड़गढ़ दुर्ग, राजस्थान

3. वन दुर्ग (Vana Durga)

- **महत्त्व:** वनस्पतियों में छिपी सुरक्षा व गुरिल्ला युद्ध की अनुकूलता।
- उदाहरण: कालिंजर किला, मध्य प्रदेश

Source: Sharma, R. (2011). Epigraphic Evidence from Chittorgarh, Gwalior, and Kalinjar Forts. Indian Epigraphical Studies, 35(2), 212-228.)

Bharat Samvāha : Values Through Time

4. मही दुर्ग (Mahi Durga)

- **महत्त्व:** मिट्टी व कच्चे पदार्थों से निर्मित प्रारंभिक नगर रक्षा संरचना।
- **उदाहरण:** राजगीर प्राचीर, बिहार

5. नर दुर्ग (Nara Durga)

- **महत्त्व:** सैनिकों की रणनीतिक तैनाती व मानव-आधारित रक्षा तंत्र।
- **उदाहरण:** पुराना किला, दिल्ली

Source: Nath, R. (1998). Military and Civic Architecture of Medieval India. Oxford University Press.)

6. धन्वन दुर्ग (Dhanvana Durga)

- **महत्त्व:** मरुस्थलीय जलवायु में जल संरक्षण व रेत सुरक्षा प्रणाली।
- **उदाहरण:** जैसलमेर किला, राजस्थान
- **साझा रक्षणीय विशेषताएँ**
  - **बुर्ज (Burj):** धनुर्धारियों व तोपचियों के लिए उच्च स्थान।
  - **ड्रॉब्रिज व लौह द्वार:** सीमित व संरक्षित प्रवेश बिंदु।
  - **मंदिर परिसर:** आंतरिक अध्यात्म के प्रतीक जैसे कालीका माता मंदिर, चित्तौड़गढ़।
  - **जल प्रबंधन:** बावड़ियाँ, कुंड व वर्षाजल संचयन हेतु स्थापत्य।

Source: Archaeological Survey of India (ASI). (n.d.). Studies on Forts and City Planning in India. ASI Archives.)

- **प्राचीन बनाम आधुनिक किलेबंदी की तुलना**

विशेषता	प्राचीन दुर्ग	आधुनिक किलेबंदी
उद्देश्य	रक्षा + संस्कृति + शासन	केवल सामरिक
डिज़ाइन	प्रकृति समेकित (पर्वत, वन, जल)	भूमिगत / एकांत
सामग्री	पत्थर, चूना, लकड़ी, मिट्टी	प्रबलित कंक्रीट व स्टील
रक्षा प्रणाली	मानवीय व प्रतीकात्मक	स्वचालित, गुप्त, इलेक्ट्रॉनिक
सांस्कृतिक भूमिका	नागरिक जीवन व पर्वों का केंद्र	प्रतिबंधित सैन्य क्षेत्र

प्राचीन भारत के दुर्ग केवल सैनिक ठिकाने नहीं थे, वे राज्य व्यवस्था, संस्कृति और वास्तु की गूढ़ समन्वय का उदाहरण थे। चाहे वह गिरी दुर्ग की ऊँचाई हो या जल दुर्ग की जलराशि, प्रत्येक दुर्ग एक भावनात्मक, भौगोलिक व सांस्कृतिक कथा कहता है।

इन दुर्गों की स्थायी उपस्थिति आज भी हमें प्रेरणा देती है कि वास्तुकला केवल निर्माण नहीं, एक सभ्यता का प्रतिबिंब है।

वास्तुशास्त्र में नगर योजना

आधुनिक शहरी योजना, जिसमें आवासीय, औद्योगिक और वाणिज्यिक क्षेत्रों में भूमि का विभाजन किया जाता है, का प्राचीन समकक्ष वास्तुशास्त्र में मिलता है। वास्तुशास्त्र नगरों, गांवों और संरचनाओं के समरस लेआउट पर ध्यान केंद्रित करता है, जो प्राकृतिक शक्तियों और ब्रह्मांडीय सिद्धांतों के अनुसार होते हैं। प्राचीन भारतीय ग्रंथ जैसे अर्थशास्त्र और नारद शिल्पशास्त्र दर्शाते हैं कि नगर योजना और शहरी वास्तुकला को कैसे व्यवस्थित रूप से संगठित किया गया था ताकि निवासियों की भलाई सुनिश्चित हो सके।

वास्तुशास्त्र में नगर योजना के सिद्धांत

वास्तुशास्त्र में, नगर योजना के लिए मूल इकाई गांव (ग्राम) है। बड़े प्रशासनिक क्षेत्र, जैसे कस्बे और शहर, कई गांवों के आधार पर निर्मित होते हैं। अर्थशास्त्र के अनुसार, बस्तियों को स्थान, कार्य और जनसंख्या आकार के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है:

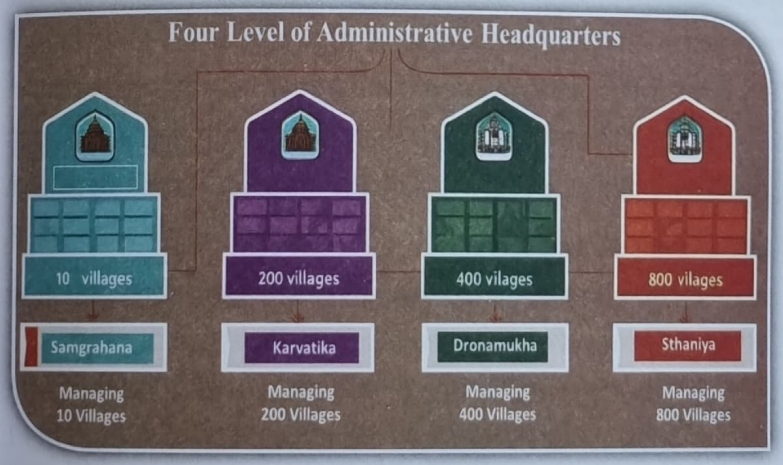

प्रशासनिक प्रभाग

- गांव (ग्राम): सबसे छोटी इकाई।
- स्थानीय प्रशासन (स्थानीय प्रशासन): दस गांवों का समूह।
- जिला मुख्यालय (जिला मुख्यालय): दो सौ गांवों का समूह।
- प्रभागीय मुख्यालय (प्रभागीय मुख्यालय): चार सौ गांवों का समूह।
- प्रांतीय मुख्यालय (प्रांतीय मुख्यालय): आठ सौ गांवों का समूह।

ये अवधारणाएं आधुनिक शहरों जैसे चंडीगढ़ और जयपुर की संरचित शहरी योजना के साथ मेल खाती हैं, जो क्रमशः वास्तुशास्त्र के सर्वतोभद्र और प्रस्तार मॉडलों के सिद्धांतों पर आधारित हैं।

Source: Deshkar, S. M. (2010). Kautilya Arthashastra and its relevance to urban planning studies. Inst Town Plan India, 7(1), 87-95.

वास्तुशास्त्र में नगर डिज़ाइन मॉडल

वास्तुशास्त्र कई नगर डिज़ाइन प्रदान करता है, जिसमें सुव्यवस्थित ग्रिड और आवासीय, धार्मिक और वाणिज्यिक स्थानों के लिए विशिष्ट ज़ोनिंग शामिल हैं। नगर का लेआउट परंपरागत रूप से एक वर्ग या ग्रिड पैटर्न में डिज़ाइन किया जाता है, जो महत्वपूर्ण नागरिक भवनों, जैसे महलों और मंदिरों के आसपास केंद्रित होता है। कुछ प्रमुख मॉडल इस प्रकार हैं:

1. **दण्डक (दण्ड):** वानप्रस्थ (सेवानिवृत्त) लोगों के लिए डिज़ाइन किया गया, जो एक सरल और व्यवस्थित रूपरेखा द्वारा चिह्नित है। दण्डक योजना प्राचीन भारतीय वास्तु ग्रंथ "मानसार शिल्पशास्त्र" में वर्णित आठ पारंपरिक नगर नियोजन मॉडलों में से एक है। इस योजना की विशेषता इसकी रेखीय संरचना है, जो "दण्ड" या छड़ी के समान है, और यह सामान्यतः छोटे नगरों और गाँवों के लिए प्रयुक्त होती है, विशेषकर उन स्थानों पर जो नदियों या सड़कों के किनारे स्थित होते हैं।"

दण्डक योजना की मुख्य विशेषताएँ

- **रेखीय संरचना**: गाँव को एक सीधी रेखा में व्यवस्थित किया जाता है, जो व्यवस्था और सरलता का प्रतीक है।
- **मुख्य सड़क:** एक केंद्रीय सड़क गाँव के बीच से गुजरती है, जिसके दोनों ओर घर और सार्वजनिक भवन पंक्तिबद्ध होते हैं। इस सड़क की चौड़ाई लगभग 1 दण्ड (लगभग 6 फुट) होती है।

- **पार्श्व सड़कें:** पार्श्व सड़कें मुख्य सड़क को समकोण पर काटती हैं, जिससे पूरे गाँव में सरल आवागमन और पहुँच सुनिश्चित होती है।
- **द्वार:** मुख्य सड़क के दोनों सिरों पर प्रवेश द्वार स्थित होते हैं, जो नियंत्रित प्रवेश और निकास सुनिश्चित करते हैं।
- **ग्राम कार्यालय:** प्रशासनिक भवन या ग्राम कार्यालय सामान्यतः गाँव के पूर्वी भाग में स्थित होते हैं।
- **मंदिर:** धार्मिक संरचनाएँ प्रायः गाँव के केंद्र से दूर, सामान्यतः बाहरी किनारों पर स्थित होती हैं। जब एक से अधिक मंदिर होते हैं, तो उन्हें आमतौर पर गाँव या नगर के विभिन्न सिरों पर रखा जाता है।
- **अनुपात:** गाँव की लंबाई इसकी चौड़ाई से दोगुनी रखी जाती है, जिससे विशिष्ट अनुपातीय दिशानिर्देशों का पालन होता है।

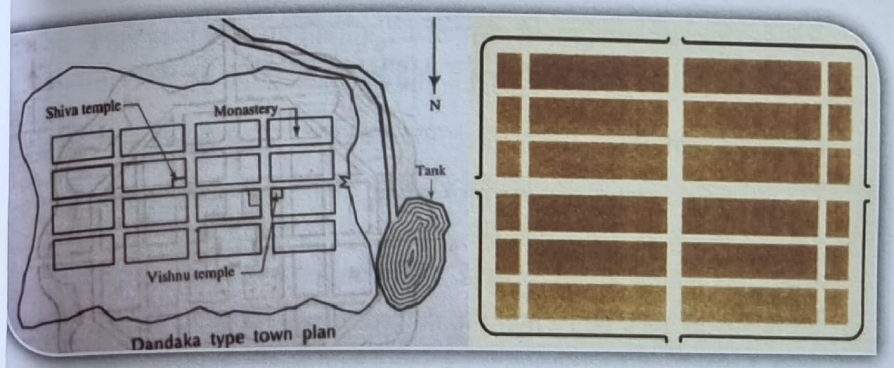

दण्डक रूपरेखा

दण्डक योजना, अपनी रेखीयता और व्यवस्था पर बल देते हुए, प्राचीन भारतीय नगर नियोजन दृष्टिकोण को दर्शाती है, जहाँ कार्यक्षमता, प्रतीकात्मकता और पर्यावरण के साथ सामंजस्य को सर्वोपरि माना गया था।

2. **सर्वतोभद्र (चतुष्कोणीय जाल/चतुर्भुज ग्रिड):** एक दुर्गीकृत, सुरक्षित ग्राम योजना, जो बाहरी खतरों के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों के लिए आदर्श है। उदाहरण: चंडीगढ़। "सर्वतोभद्र" शब्द का अर्थ है "सभी दिशाओं से शुभ", जो ऐसी योजना को दर्शाता है जो हर दिशा में कल्याण और सामंजस्य सुनिश्चित करती है।

मुख्य विशेषताएँ

- **आकार और संरचना**
  - योजना चतुर्भुज (वर्गाकार) होती है, जो स्थिरता और संतुलन का प्रतीक है।
  - यह एक से पाँच मुख्य मार्गों (प्रमुख सड़कों) को सम्मिलित करती है जो नगर को पार करते हैं, जिनके साथ बाहरी परिधीय सड़कें होती हैं।
- **कोणीय संरचनाएँ**
  - चारों कोनों पर प्रमुख सार्वजनिक भवन जैसे मठ, मंदिर या विश्रामगृह स्थित होते हैं।
  - आवश्यकतानुसार अन्य सार्वजनिक संरचनाएँ विभिन्न खंडों में वितरित की जाती हैं।
- **द्वार और प्रवेश**
  - मुख्य द्वार चारों दिशाओं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम) में स्थित होते हैं, जो प्रवेश को सुविधाजनक बनाते हैं और खुलेपन का प्रतीक हैं।
- **जोनिंग प्रणाली**
  - विभिन्न व्यापारों और व्यवसायों के लिए अलग-अलग भूखंड आवंटित किए जाते हैं, जो प्रारंभिक जोनिंग व्यवस्था को दर्शाते हैं।
- **केंद्रीय क्षेत्र**
  - केंद्र की ओर जनसंख्या घनत्व कम होता जाता है, और अंततः एक खुला क्षेत्र होता है जहाँ कोई भवन नहीं होता।
  - यह केंद्रीय रिक्त स्थान आधुनिक शहरी केंद्रों से भिन्न है, जो सामान्यतः घने रूप से निर्मित होते हैं।
- **द्वितीयक सड़कें**
  - दो मुख्य सड़कों के बीच कम महत्त्वपूर्ण सड़कें या गलियाँ प्रदान करने पर बल दिया जाता है, जिन्हें अधिमानतः एक ओर एक फूटपाथ के साथ बनाया जाता है।

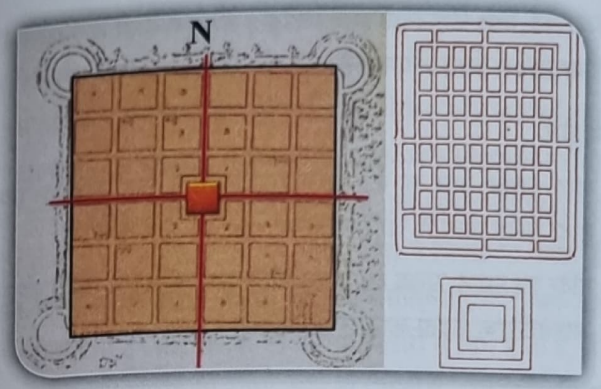

सर्वतोभद्र रूपरेखा

सर्वतोभद्र योजना के विपरीत, दण्डक योजना में व्यापार और व्यवसायिक गतिविधियाँ केंद्र में केंद्रित होती हैं, जबकि आवासीय क्षेत्र बाहरी किनारों की ओर विस्तृत होते हैं। यह व्यवस्था वाणिज्यिक क्षेत्रों के निर्बाध विस्तार की अनुमति देती है, बिना मौजूदा आवासीय क्षेत्रों को बाधित किए या व्यापक पुनर्निर्माण की आवश्यकता के।

3. **नन्द्यावर्त (चतुर्भुज संकेंद्रित संरचना):** इस योजना में केन्द्रीय वलय और बारह प्रवेश-निकास द्वार होते हैं, जो सड़कों के जाल द्वारा जुड़े होते हैं, जिससे आवागमन में सुविधा सुनिश्चित होती है। नन्द्यावर्त एक संस्कृत शब्द है, जो एक ऐसे नगर नियोजन को संदर्भित करता है जो एक केंद्रीय वर्ग के साथ वृत्ताकार होता है और जिसकी सड़कों का विस्तार बाहर की ओर होता है। इस प्रकार की नगर योजना प्राचीन भारत में, विशेषतः नगरों और बड़े बस्तियों के निर्माण में सामान्यतः प्रयुक्त होती थी। साथ ही, नन्द्यावर्त एक विशिष्ट प्रकार के स्वस्तिक चिन्ह को भी संदर्भित करता है और यह एक सफेद फूल का नाम भी है, जो अपनी आपस में अतिक्रांत पंखुड़ियों के लिए जाना जाता है। यह योजना इसी अतिक्रांत प्रतिरूप की नकल करती है, जो समृद्धि और शुभता का प्रतीक है।

नन्द्यावर्त योजना की मुख्य विशेषताएँ

- **आकार और संरचना**
  - रूप: योजना या तो वृत्ताकार या चतुर्भुजाकार होती है, जिसे लगभग 3,000 से 4,000 घरों के लिए डिज़ाइन किया जाता है।

- आयाम: नगर की लंबाई इसकी चौड़ाई से दुगुनी होती है, जिससे एक लंबवत आयताकार आकार बनता है।

- **केंद्रीय क्षेत्र**
  - खुला स्थान: नगर का केंद्र खुला रखा जाता है, जहाँ संभवतः एक मंडप या मंदिर स्थित होता है, जो सामुदायिक केंद्र का कार्य करता है।
  - मंदिर का स्थान: मुख्य देवता का मंदिर नगर के केंद्र में स्थित होता है, जिससे आध्यात्मिक केंद्रता का बल मिलता है।

- **सड़क योजना**
  - प्रसारित सड़कें: सड़कें केंद्रीय वर्ग से बाहर की ओर प्रसारित होती हैं, जो नगर के विभिन्न भागों तक आसान पहुँच और विभिन्न मोहल्लों के बीच संपर्क को बढ़ावा देती हैं।
  - समानांतर सड़कें: सड़कें केंद्रीय सड़कों के समानांतर चलती हैं, जिससे संगठित आवागमन और पहुँच सुनिश्चित होती है।

- **जोनिंग और कार्यात्मकता**
  - आवासीय और व्यावसायिक क्षेत्र: इस योजना में विभिन्न व्यवसायों और व्यापारों के लिए निर्धारित भूखंड शामिल हैं, जो प्रारंभिक जोनिंग व्यवस्था को प्रस्तुत करते हैं।
  - सामुदायिक स्थान: केंद्रीय खुला क्षेत्र समुदाय के एकत्र होने का स्थान होता है, जो सामाजिक संपर्क और एकता को प्रोत्साहित करता है।

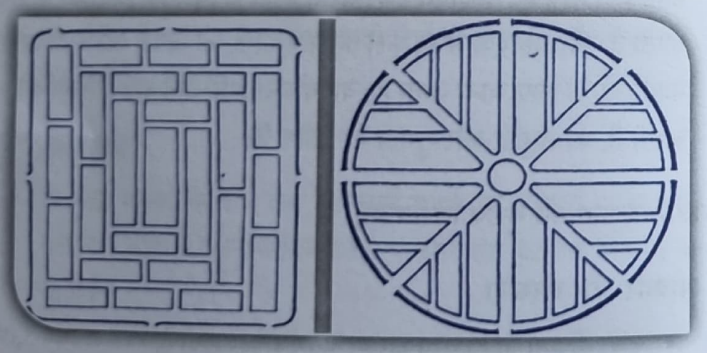

नन्द्यावर्त रूपरेखा

4. **पद्मक (कमल):** कमल की पंखुड़ियों के समान रूपरेखा। यह योजना प्राचीन भारतीय नगर नियोजन में निहित है और मानसार जैसे ग्रंथों में विस्तृत रूप से वर्णित है। इसका प्रेरणा स्रोत कमल का फूल है, जो पवित्रता और आध्यात्मिक सामंजस्य का प्रतीक है। इस डिज़ाइन में एक केंद्रीय मंदिर या परिषद भवन होता है, जिससे बारह मुख्य सड़कें बाहर की ओर फैलती हैं, जो कमल की पंखुड़ियों के समान प्रतीत होती हैं। ये सड़कें बस्ती को बारह भागों में विभाजित करती हैं, जिनमें से प्रत्येक भाग अलग-अलग कार्यों, जैसे आवासीय या वाणिज्यिक क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त हो सकता है। यह योजना सामान्यतः दीवारों से घिरी होती है, जो वृत्ताकार, चतुष्कोणीय, षट्कोणीय या अष्टकोणीय हो सकती हैं, और प्रत्येक प्रसारित सड़क के छोर पर द्वार स्थित होते हैं। प्रायः पूरा नगर जल से घिरा होता था, जिससे यह द्वीप जैसा प्रतीत होता था और विस्तार की संभावनाएँ सीमित होती थीं। इस डिज़ाइन का प्रयोग प्रायः दुर्गीकृत नगरों और आध्यात्मिक केंद्रों के लिए किया जाता था, जहाँ सौंदर्य और प्रतीकात्मक महत्व दोनों पर बल दिया जाता था।

पद्मक योजना की मुख्य विशेषताएँ

- **कमल-प्रेरित डिज़ाइन**
  - नगर को इस प्रकार डिज़ाइन किया जाता है कि वह कमल के समान प्रतीत हो, जिसमें सड़कें एक केंद्रीय बिंदु से पंखुड़ियों की तरह बाहर की ओर प्रसारित होती हैं।

- **सड़क विन्यास:**
  - इस योजना में चार से आठ मुख्य सड़कें सम्मिलित होती हैं।
  - नगर के भीतर और चारों ओर की सभी प्रमुख सड़कों पर फुटपाथ बनाए जाते हैं।
  - कोई भी सड़क नगर के ठीक केंद्र से होकर नहीं गुजरती।
  - मुख्य द्वार चारों दिशाओं — पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण — में स्थित होते हैं।

- **आवासीय और सार्वजनिक क्षेत्र:**
  - आवासीय भवनों को छह भूखंडों में स्थित किया जाता है, जिन्हें विकर्ण

रेखाओं द्वारा विभाजित किया जाता है, जिससे तिरछी या विकर्णीय सड़कें बनती हैं।

- सबसे महत्वपूर्ण आवासीय क्षेत्र इन्हीं विकर्णीय सड़कों के किनारे स्थित होते हैं।
- चार प्रमुख विकिरणीय सड़कों पर, जो चार दिशाओं की ओर जाती हैं, प्रमुख सार्वजनिक भवन स्थित होते हैं।

- **संरचनात्मक संशोधन**
  - कुछ विविधताओं में, परिधीय संपर्क सड़कों और तीन केन्द्रीय वृत्तों को सीधा कर दिया जाता है, जिससे योजना अष्टकोणीय रूप धारण कर लेती है।
- **दुर्गीकृत और जल से घिरा हुआ**
  - पद्मक योजना का सामान्यतः उन नगरों में प्रयोग होता था जो दीवारों से सुरक्षित और जल से घिरे होते थे, जिससे नगर एक द्वीप जैसा प्रतीत होता था।
  - यह डिज़ाइन प्राकृतिक सुरक्षा व्यवस्था प्रदान करती थी और विस्तार की संभावना को सीमित करती थी।

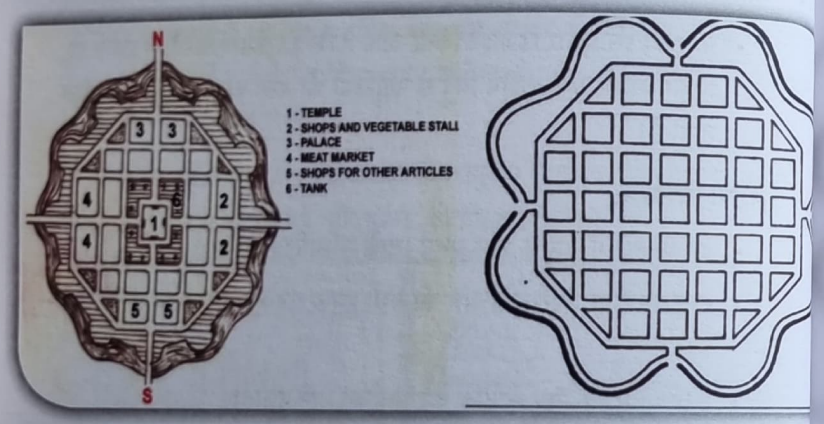

(पद्मक - कमल रूपरेखा)

5. **प्रस्तार (शय्या):** इस डिज़ाइन में शय्या या बिस्तर के आकार का अनुकरण होता है। उदाहरण: जयपुर।

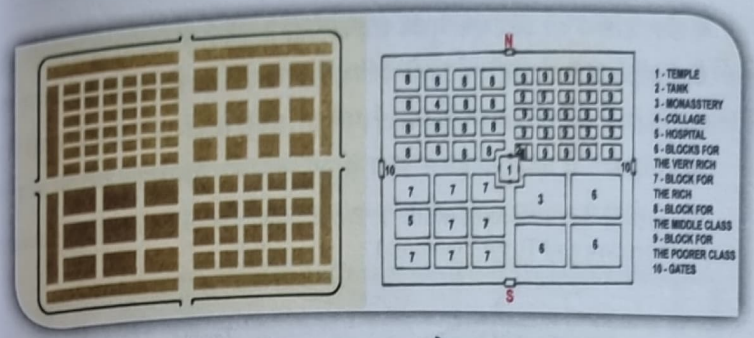

प्रस्तार (शय्या) रूपरेखा

प्रस्तार योजना एक वर्गाकार या आयताकार नगर योजना है, जो प्राचीन भारतीय वास्तुकला में निहित है और विशेष रूप से मानसार ग्रंथ में विस्तृत रूप से वर्णित है। इस डिज़ाइन में नगर को 16 वर्गाकार खंडों में विभाजित किया जाता है, जिसमें तीन मुख्य सड़कें पूर्व-पश्चिम दिशा में और तीन उत्तर-दक्षिण दिशा में जाती हैं, जिससे एक जालवत संरचना बनती है। केंद्रीय क्षेत्र में प्रायः एक मंदिर होता है, और आवासीय तथा वाणिज्यिक क्षेत्र बाहर की ओर प्रसारित होते हैं।

इस योजना में भूखंडों का आवंटन सामाजिक श्रेणी के आधार पर किया जाता है, जिसमें संपन्न व्यक्तियों को बड़े भूखंड प्रदान किए जाते हैं। मुख्य सड़कें अन्य योजनाओं की अपेक्षा विशेष रूप से चौड़ी होती हैं, और नगर को किलेबंदी से घेरा जा सकता है या नहीं भी। यह संगठित दृष्टिकोण कार्यात्मकता और सामाजिक व्यवस्था का समन्वय दर्शाता है, जिसे प्रायः अधिक विकसित वैदिक बस्तियों में लागू किया जाता था। (Source: Understanding the Vastu Shastra: City planning in walled city of Jaipur, international journal of architecture and engineering, doi.org/10.53136/97912599480766).

6. **कर्मुक (धनुष):** सामान्यतः तटीय नगरों के लिए प्रयुक्त, यह डिज़ाइन धनुष के आकार का होता है। उदाहरण: पूम्पुहार और कावेरीपट्टनम। कार्मुक योजना, जो संस्कृत शब्द "धनुष" से व्युत्पन्न है, प्राचीन भारतीय नगर नियोजन का एक मॉडल है जो धनुष, अर्धवृत्त या परवलय के आकार वाले स्थलों के लिए उपयुक्त होता है, और विशेष रूप से समुद्रतट या नदी किनारे स्थित नगरों में लागू किया जाता था। इस डिज़ाइन में सामान्यतः धनुष के आकार की दीवार से घिरा हुआ नगर होता है, जिसमें दो मुख्य द्वार उत्तर और दक्षिण दिशाओं में स्थित होते हैं। नगर के मध्य

Vastu Shastra : The Sacred Science of Space and Harmony
Bharat Samvaha : Values Through Time

में उत्तर-दक्षिण की ओर एक मुख्य सड़क होती है, जिसे समकोण पर काटती हुई पार्श्व सड़कें क्षेत्र को विभिन्न खंडों में विभाजित करती हैं। सुरक्षा के लिए नगर के चारों ओर एक गहरी और चौड़ी खाई (परिखा) होती है, जो जल से भरी होती है। बस्ती के केंद्र में एक देवी मंदिर होता है, जो नगर की अधिष्ठात्री देवी के रूप में पूजित होती है। (Source: Aswani, T. D., & Kalluraya, S. The Indian Ancient Architecture and Town Planning.)

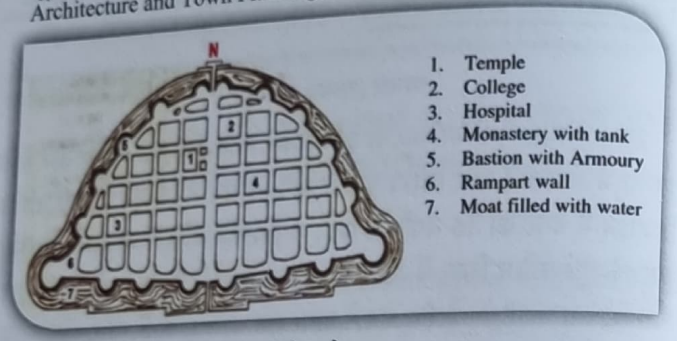

कार्मुक योजना

7. **चतुर्मुख (चारमुखी):** एक ऐसी योजना जिसमें केंद्र से चार मुख्य अक्ष प्रसारित होते हैं। चतुर्मुख योजना, जैसा कि प्राचीन भारतीय ग्रंथों जैसे मानसार में वर्णित है, वर्गाकार या आयताकार स्थलों के लिए उपयुक्त नगर नियोजन मॉडल है। इस डिज़ाइन में एक चौड़ी सड़क नगर के चारों ओर घूमती है, जिसमें दोनों ओर फुटपाथ बने होते हैं। केंद्रीय क्षेत्र को चार खंडों में विभाजित किया जाता है, प्रत्येक खंड के सिर पर एक द्वार या प्रवेश द्वार होता है, जो सभी दिशाओं से पहुँच प्रदान करता है। नगर का संगठन चार मुख्य सड़कों के साथ किया जाता है, जो पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण दिशाओं में चलती हैं तथा समकोण पर एक-दूसरे को काटती हैं, जिससे एक जालवत संरचना बनती है। इस योजना के केंद्र में एक मंदिर होता है, जो नगर की अधिष्ठात्री देवी को समर्पित होता है और नगर का आध्यात्मिक केंद्र होता है। आवासीय क्षेत्र व्यवस्थित रूप से नियोजित होते हैं, जिसमें शूद्रों के आवास नगर के बाहरी किनारों पर स्थित होते हैं। यह योजना कार्यात्मकता और सामाजिक संगठन का एक समन्वय दर्शाती है, जो नगर नियोजन में आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक दोनों पहलुओं को महत्व देती है। (Source: Boner, A., Śarmā, S. R., & Bäumer, B. (1996). The essence of form in sacred art. Motilal Banarsidass Publishe. 1-59)

8. **स्वस्तिक:** एक डिजाइन जिसमें आठ सड़कें विभिन्न दिशाओं से गाँव में प्रवेश करती हैं। स्वस्तिक योजना एक प्राचीन भारतीय नगर नियोजन मॉडल है जिसमें स्वस्तिक जैसा पैटर्न होता है। स्थल, जो किसी भी आकार का हो सकता है, विकर्ण सड़कों द्वारा त्रिकोणीय भूखंडों में विभाजित होता है।

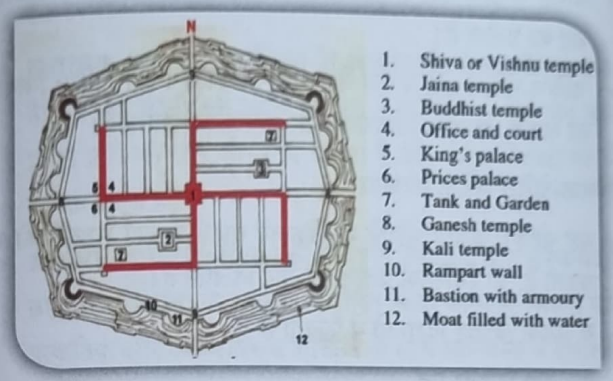

एक किलेबंद दीवार और खाई बस्ती को घेरती है, जो रक्षा को मजबूत करती है। दो मुख्य सड़कें बस्ती के केंद्र में एक-दूसरे को काटती हैं, जो पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण दिशा में चलती हैं, और शाखा सड़कें स्वस्तिक डिजाइन का पालन करती हैं। केंद्रीय क्षेत्र में एक मंदिर स्थित होता है, जो अक्सर एक देवी को समर्पित होता है, और एक जैन मंदिर दक्षिण-पश्चिम चौखट में स्थित होता है। दीवार को प्रक्षिप्त अस्त्रों से सुदृढ़ किया जाता है, और स्वस्तिक आकार चार द्वारों की रक्षा करता है, जिससे डिजाइन को आकर्षण और रणनीतिक लाभ मिलता है।

(Source: Wagoner, P. B. (1999). Ananda K. Coomaraswamy and the Practice of Architectural History. Journal of the Society of Architectural Historians, 58(1), 62-67. Ramanujan, A. K. (1989). Is there an Indian way of thinking? An informal essay. Contributions to Indian sociology, 23(1), 41-58.)

स्वस्तिक योजना की मुख्य विशेषताएँ

- **केंद्रीय चौराहा**
  - नगर दो मुख्य सड़कों के चारों ओर संरचित होता है, जो एक-दूसरे के लंबवत होती हैं: एक पूर्व-पश्चिम दिशा में और दूसरी उत्तर-दक्षिण दिशा में।

- ये सड़कें बस्ती के केंद्र में एक-दूसरे को काटती हैं, जिससे एक चौराहा बनता है जो पूरे योजना का मुख्य बिंदु होता है।

- **मंदिर की स्थिति**
  - चौराहे के ठीक केंद्र में एक मंदिर स्थित होता है, जो समुदाय के आध्यात्मिक केंद्र का प्रतीक है।
  - दक्षिण-पश्चिम खंड में एक जैन मंदिर विशेष रूप से निर्धारित किया जाता है, जो क्षेत्र की धार्मिक विविधता और महत्व को दर्शाता है।

- **स्वस्तिक-प्रेरित सड़क संरचना**
  - यह योजना केंद्रीय चौराहे से निकलने वाली विकर्ण सड़कों को सम्मिलित करती है, जो स्वस्तिक प्रतीक की याद दिलाती हैं।
  - ये सड़कें विशिष्ट दिशाओं में फैलती हैं–
    - पूर्व से उत्तर-पूर्व
    - दक्षिण से दक्षिण-पूर्व
    - पश्चिम से दक्षिण-पश्चिम
    - उत्तर से उत्तर-पश्चिम
  - यह व्यवस्था न केवल सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक है बल्कि ब्रह्मांडीय सिद्धांतों के अनुसार निर्मित वातावरण को प्राकृतिक शक्तियों के साथ संतुलित करने का प्रयास भी करती है।

- **किलेबंदी**
  - बस्ती के चारों ओर एक प्राचीर दीवार होती है, जिसे प्रक्षिप्त अस्त्रों द्वारा सुदृढ़ किया जाता है, जो सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने को दर्शाता है।
  - दीवार के आधार पर एक गहरी खाई बनाई जाती है, जो रक्षा तंत्र को और भी सशक्त बनाती है, तथा नगर नियोजन में सुरक्षा के महत्व को दर्शाती है।

- **81-इकाई विभाजन**
  - पूरा नगर 81 समान इकाइयों में विभाजित होता है, जो नगरीय डिज़ाइन में क्रम और समरूपता पर बल देता है।
  - यह विभाजन संगठित ज़ोनिंग और भूमि के कुशल उपयोग को सुगम बनाता है, जो वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों के अनुरूप है।

- **प्रतीकवाद और सांस्कृतिक महत्व**
  - **स्वस्तिक प्रतीक:** स्वस्तिक हिंदू धर्म का एक प्राचीन प्रतीक है, जो शुभता, समृद्धि और जीवन के चक्रीय स्वभाव का प्रतिनिधित्व करता है। नगर नियोजन में इसका समावेश सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आयामों को रेखांकित करता है।
  - **रक्षात्मक रणनीति:** स्वस्तिक के आकार की योजना केवल सजावटी नहीं है; यह एक रणनीतिक उद्देश्य भी पूरा करती है। यह डिज़ाइन बस्ती के चार प्रवेश द्वारों की रक्षा को सुगम बनाता है और पहुँच बिंदुओं पर नियंत्रण को सशक्त करता है।
  - **ब्रह्मांडीय संरेखण:** सड़कों की दिशागत उन्मुखता और संरचनाओं का स्थान ब्रह्मांडीय सिद्धांतों के अनुसार निर्धारित किया जाता है, जिससे मानव निवास प्राकृतिक और आध्यात्मिक शक्तियों के साथ सामंजस्य में रहता है।

व्यावहारिक विचार

- **अनुकूलता:** यद्यपि यह योजना वर्गाकार या आयताकार स्थलों के लिए आदर्श है, फिर भी इसे विभिन्न आकृतियों में भी अनुकूलित किया जा सकता है, जो इसके अनुप्रयोग में लचीलापन दर्शाता है।
- **स्थान दक्षता:** 81 इकाइयों का विभाजन आवासीय, वाणिज्यिक और धार्मिक प्रयोजनों के लिए भूमि के व्यवस्थित आवंटन को संभव बनाता है, जिससे संगठित शहरी विकास को बढ़ावा मिलता है।
- **सांस्कृतिक एकीकरण:** शहरी संरचना में धार्मिक संस्थानों का एकीकरण प्राचीन भारतीय समाज में आध्यात्मिकता के दैनिक जीवन और शासन में केंद्रीय स्थान को दर्शाता है।

स्वस्तिक योजना प्राचीन भारतीय नगर नियोजन दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ नगरीय डिज़ाइन आध्यात्मिक विश्वासों, सांस्कृतिक प्रतीकों और व्यावहारिक आवश्यकताओं से गहराई से जुड़ा हुआ था। इस समग्र दृष्टिकोण का उद्देश्य ऐसे निवास स्थानों का निर्माण करना था जो न केवल कार्यशील और सुरक्षित हों, बल्कि आध्यात्मिक रूप से गुंजायमान और सांस्कृतिक रूप से सार्थक भी हों।

मयमतम्, एक अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ, आठ प्रकार के बस्ती लेआउट पर चर्चा करता है, जो स्थान के कार्यात्मक और सौंदर्यपूर्ण वितरण पर ध्यान केंद्रित करता है। राजधानी शहरों के मामले में, चार मुख्य द्वार होते हैं, जिनके कोनों पर अतिरिक्त द्वार होते हैं। केंद्रीय सड़कों का मिलन शहर के केंद्र में होता है, जहां सार्वजनिक भवन और मंदिर स्थित होते हैं।

सड़क का विन्यास और क्षेत्र विभाजन

बड़ी बस्तियों में सड़क नेटवर्क नगर योजना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विष्णु पुराण तीन प्रकार की सड़कों का वर्णन करता है:

- **रथ्या (रथ मार्ग):** वाहनों के लिए सड़कें।
- **वीथि (राजपथ):** मुख्य मार्ग।
- **नृणां मार्ग: (पैदल यात्रियों के मार्ग):** पैदल यात्रियों के लिए सड़कें।

1876 में जयपुर। स्रोत: ओ माय राजस्थान

सुव्यवस्थित सड़क प्रणाली यातायात प्रवाह और शहर की समग्र जीवनशैली के लिए महत्वपूर्ण है। समरांगण सूत्रधार में 34 प्रकार की सड़कों की सिफारिश की गई है, जो पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण दिशाओं में व्यवस्थित होती हैं। सड़कों को सूर्य के प्रकाश और वेंटिलेशन का लाभ उठाने के लिए सावधानीपूर्वक उन्मुख किया जाता है। प्रमुख

सड़कों, जैसे राजमार्ग (राजा-मार्ग), को यातायात के मुक्त प्रवाह को समायोजित करने के लिए पर्याप्त चौड़ा बनाया जाता है और कंकड़ से मजबूत किया जाता है। इन सड़कों के दोनों ओर पैदल यात्रियों के लिए मार्ग भी होते हैं।

सड़क विनिर्देश

- **राजमार्ग (राजा-मार्ग):** 54 फीट चौड़ा।
- **शहर की सड़कें:** 27 फीट चौड़ी।
- **सुरक्षित सड़कों:** विभिन्न कार्यों के लिए निर्दिष्ट चौड़ाई, जैसे नगरों, ग्रामीण क्षेत्रों और बंदरगाह नगरों की सड़कों के लिए।

जयपुर में स्थापित सड़क नेटवर्क, जिसे राजा जय सिंह ने स्थापित किया था, प्राचीन सड़क प्रणाली का आधुनिक संदर्भ में उदाहरण है।

आवासीय वास्तुकला

वास्तु-शास्त्र में आवासीय भवनों का डिजाइन निवासियों की सामाजिक स्थिति, जीवन के चरण (आश्रम) और विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता है। समरांगण-सूत्रधारा में आवासीय घरों की विस्तृत वर्गीकरण दी गई है, एक कमरे वाले आवासों से लेकर अधिक विशाल और शानदार घरों तक जो उच्च वर्ग के लिए होते हैं। इस ग्रंथ में 108 एक कमरे वाले घर, 52 दो कमरे वाले घर, और 72 तीन कमरे वाले घरों का विवरण है। घरों का डिज़ाइन और सजावट निवासियों की संपत्ति और सामाजिक स्थिति के आधार पर भिन्न होती है। वास्तु-शास्त्र में आवासीय वास्तुकला वास्तु और पद-विन्यास के सिद्धांतों से भी गहरे जुड़े होते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि घर प्राकृतिक और ब्रह्मांडीय शक्तियों के साथ सामंजस्य में हो। इसकी योजना में आंगन, बालकनी, खिड़कियां और अन्य तत्व शामिल होते हैं जो निवासियों की व्यावहारिक और सौंदर्यात्मक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

सार्वजनिक अवसंरचना

प्राचीन भारतीय नगरों में सार्वजनिक अवसंरचना दैनिक जीवन और सामाजिक कार्यों के लिए अभिन्न थी। समरांगण-सूत्रधारा ने राजसी भवनों, मंदिरों और सार्वजनिक स्थानों जैसे पुस्तकालयों, स्वास्थ्य केंद्रों और सार्वजनिक हॉल की वास्तुकला को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। एक अच्छी तरह से योजनाबद्ध शहर में ये नागरिक संरचनाएं नगर के केंद्र में स्थित होती हैं, जहाँ मनोरंजन और सामाजिक समारोहों के लिए पर्याप्त स्थान होता है।

वास्तु-शास्त्र में राजमहल

वास्तु-शास्त्र में राजमहलों के डिज़ाइन और योजना पर विशेष ध्यान दिया जाता है ताकि वे राजा, उसके कर्मचारियों और समग्र राज प्रशासन की कार्यात्मक और सौंदर्यात्मक आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। राजमहल का निर्माण एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें न केवल राजा का निवास, बल्कि उसके दरबार, मंत्रियों, कमांडरों, रानियों और अन्य महत्वपूर्ण सदस्यों के लिए स्थानों का निर्माण भी शामिल होता है। इसके अलावा, महल में आनंद उद्यान, शाही पशुओं के लिए अस्तबल और शाही समारोहों के लिए स्थान भी होने चाहिए। राजमहल की योजना के लिए दिशा-निर्देश समरांगण-सूत्रधारा में पाए जाते हैं, जो इन भव्य संरचनाओं को ब्रह्मांडीय सिद्धांतों के अनुरूप डिज़ाइन करने के निर्देश प्रदान करता है। समरांगण-सूत्रधारा के अध्याय 15 में विशेष रूप से राजमहलों की योजना और महल परिसर के विभिन्न घटकों पर चर्चा की गई है।

राजमहल की योजना और विन्यास

राजमहल की योजना तब शुरू होती है जब शहर की समग्र योजना पूरी हो जाती है। नगर का स्थल योजना आमतौर पर 64 वर्गों के एक ग्रिड पर आधारित होती है, जिसमें राजमहल शहर के पश्चिमी भाग में स्थित होता है, और उत्तर की ओर उन्मुख होता है। इसे शहर की किलाबंदी के निर्माण के बाद स्थापित किया जाता है, जिसमें खाई, दीवारें, किलों और विभिन्न देवताओं को समर्पित पूजा स्थल होते हैं।

राजमहल के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं–

- **राजा का निवास:** राजा और उसके परिवार के लिए केंद्रीय स्थान।
- **मंत्रियों और कमांडरों के निवास:** उच्च रैंकिंग अधिकारियों और सैन्य नेताओं के लिए अलग स्थान।
- **आनंद उद्यान और बगीचे:** बगीचे महल की योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं, जो विश्राम और मनोरंजन के लिए एक शांत वातावरण प्रदान करते हैं।
- **अस्तबल:** शाही जानवरों, विशेष रूप से हाथियों और घोड़ों के लिए निर्दिष्ट स्थान, जो शाही जीवन और सैन्य शक्ति में होते हैं।
- **राज्याभिषेक हॉल:** एक शाही कक्ष, जहाँ राजा का औपचारिक रूप से राज्याभिषेक किया जाता है और अन्य महत्वपूर्ण शाही अनुष्ठान आयोजित होते हैं।

- **सभा (सभा कक्ष):** एक बड़ा सभा कक्ष जहाँ बैठकें और न्यायिक कार्यवाही होती हैं।

सभा (अधिवेशन कक्ष)

सभा (या अधिवेशन कक्ष) राजमहल का एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थान होता है। यह सरकारी कार्यों, राजसी घोषणाओं और कुलीनों, मंत्रियों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की बैठकों का स्थान होता है। समरांगण-सूत्रधारा में सभा के डिज़ाइन का विस्तृत विवरण दिया गया है, जिसमें कक्ष के स्तंभों की संख्या, प्रवेश डिज़ाइन और गलियारे या पोर्च की उपस्थिति के आधार पर आठ विभिन्न डिज़ाइन सुझाए गए हैं। सभा में अक्सर बड़ी संख्या में स्तंभ होते हैं (36 तक) और इसमें अग्निकुंड होते हैं, जो आधुनिक संसदीय या राष्ट्रपति हॉल की तरह होते हैं।

मयामतम में भी सार्वजनिक हॉल्स के डिज़ाइन का वर्णन है, जिसमें सभा कक्ष के नौ प्रकार के विन्यास और अतिरिक्त डिज़ाइन सुविधाएं जैसे कि चौकोर या आयताकार मंडप शामिल हैं।

सार्वजनिक उपयोगिता और अवसंरचना

महल के अलावा, वास्तु-शास्त्र ग्रंथों में शाही परिसर के भीतर विभिन्न सार्वजनिक उपयोगिता और अवसंरचना की डिज़ाइन पर भी चर्चा की गई है, जैसे कि:

- **रंगमंच:** मनोरंजन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के लिए स्थान।
- **कला दीर्घाएँ:** शाही कला और कलाकृतियों के संग्रह को प्रदर्शित करने के लिए डिज़ाइन की गई।
- **न्यायालय:** जहाँ कानूनी मामलों का निपटारा किया जाता था, जो अक्सर राजसी परिसर में स्थित होते थे।

वास्तु-शास्त्र में मंदिर वास्तुकला

मंदिर, जैसे कि महल, शहर के आध्यात्मिक और नागरिक जीवन के अभिन्न अंग होते हैं। वास्तु-शास्त्र में मंदिरों की डिज़ाइन में ज्यामिति, अनुपात और ब्रह्मांड के साथ संरेखण पर जोर दिया जाता है। मंदिरों का डिज़ाइन अत्यधिक सटीकता से किया जाता है और ये दिव्य आदेश को व्यक्त करने के लिए होते हैं। आमतौर पर इनका विन्यास वर्ग या ग्रिड प्रणाली में होता है, जिसमें ऊंचे मीनार होते हैं और जटिल उकेरे गए चित्र होते हैं, जो

अक्सर पुराणों की कथाओं को प्रदर्शित करते हैं। उत्तर भारत के मंदिर नागर शैली को अपनाते हैं, जबकि दक्षिण भारत के मंदिर द्रविड़ शैली का पालन करते हैं।

मंदिर के प्रमुख घटक

1. **गर्भगृह (संक्तमं स्थल):** मंदिर का सबसे भीतरी कक्ष, जहाँ देवता की मुख्य मूर्ति रखी जाती है। यह पवित्र स्थान मंदिर का केंद्र होता है और वास्तु-पुंष-मंडल के सिद्धांतों के अनुसार डिज़ाइन किया जाता है।
2. **मंडप:** ये स्तंभयुक्त हॉल होते हैं जो गर्भगृह से जुड़े होते हैं। प्रमुख प्रकार के मंडप:
   - मुख-मंडप: प्रवेश मंडप।
   - अर्ध-मंडप: अग्रभाग मंडप।
   - महा-मंडप: मुख्य हॉल, जो प्रायः बड़ा और भव्य रूप से सुसज्जित होता है।
3. **प्राकार:** गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा करने के लिए खुला मार्ग, जहाँ भक्त मंदिर के चारों ओर पूजा के रूप में चलते हैं। बड़े मंदिरों में एक से अधिक परिक्रमा हो सकती है।
4. **अधिष्ठान (आधार मंच):** वह ऊँचा मंच जिस पर मंदिर खड़ा होता है। यह आधार संरचना को स्थिरता प्रदान करता है और सजावटी तत्वों से अलंकृत होता है।
5. **स्तंभ (पिलर):** वे स्तंभ जो संरचना का समर्थन करते हैं, विशेष रूप से मंदिर की सुपर-संरचना। ये जटिल रूप से उकेरे जाते हैं और पूरे मंदिर में पाए जाते हैं, जो संरचनात्मक समर्थन और सौंदर्यात्मक मूल्य दोनों प्रदान करते हैं।
6. **प्रस्तर:** मंदिर का शीर्ष भाग, जो बीम और छत संरचना को शामिल करता है। बहु-मंजिला मंदिरों में प्रस्तर मंदिर की ऊंचाई और भव्यता में योगदान देता है।
7. **शिखर:** वह ऊपरी संरचना जो गर्भगृह के ऊपर उठती है, जो अक्सर मीनार के रूप में होती है। दक्षिण भारतीय मंदिरों में इसे विमाना कहा जाता है, और यह आमतौर पर एक गुंबदाकार शिखर के साथ समाप्त होता है।
8. **स्तूप:** मंदिर संरचना का शिखर, जो शिखर के शीर्ष पर स्थित होता है। यह मंदिर का सबसे ऊँचा बिंदु होता है और अक्सर दिव्य ऊर्जा के प्रतीकों से सजाया जाता है।

मंदिर के प्रमुख घटक

मंदिर चित्रकला

वास्तु-शास्त्र के अतिरिक्त, मंदिरों में मूर्तियों के निर्माण (चित्रकला) का भी वर्णन है। मूर्ति के विभिन्न भागों, जैसे सिर, धड़, अंग और चेहरे के अनुपात को ध्यान में रखते हुए, मूर्ति को आकर्षित और आध्यात्मिक दृष्टि से शुभ और आकर्षक बनाना महत्वपूर्ण है। वराहमिहिर ने अपनी कृति बृहतसंहिता में पुरुष और महिला मूर्तियों के निर्माण के लिए विस्तृत मापदंड दिए हैं, जिसमें दोनों लिंगों के शरीर के भागों की लंबाई और ऊचाई के अनुपात का वर्णन है।

निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय नगर नियोजन और वास्तु-शास्त्र के सिद्धांत न केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि आधुनिक शहरी विकास के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। यह अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि नगर नियोजन की परंपरा केवल संरचनात्मक विकास तक सीमित नहीं थी, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और पर्यावरणीय कारकों के साथ संतुलन स्थापित करने पर भी बल देती थी। प्राचीन भारतीय नगर नियोजन की वैज्ञानिकता, सुव्यवस्थित दृष्टिकोण और आधुनिक उपयोगिता को सरल भाषा में प्रस्तुत करती है, जिससे पाठक न केवल इतिहास से परिचित हो सकें, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शहरी योजनाओं में भी इन सिद्धांतों का प्रभाव देख सकें। हमें आशा है कि यह ग्रंथ नगर नियोजन, वास्तुकला और ऐतिहासिक अध्ययन के शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों और योजनाकारों के लिए एक उपयोगी संसाधन सिद्ध होगा।

अनुशंसित पठन सामग्री

1. Shukla, D.N. (1993). *Vastu-Sastra: Hindu Science of Architecture*, New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers, ISBN: 9788121505655
2. Kramrisch, Stella (1946). *The Hindu Temple*, Calcutta: University of Calcutta, ISBN: 9788120802229
3. Hardy, Adam (1995). *Indian Temple Architecture: Form and Transformation*, New Delhi: Indira Gandhi National Centre for the Arts, ISBN: 9788173050641
4. Acharya, P.K. (1933). *Mayamatam: Treatise of Housing Architecture and Iconography*. New Delhi: Indira Gandhi National Centre for the Arts, ISBN: 9788120800799
5. Acharya, P.K. (1934). *Manasara on Architecture and Sculpture*, New Delhi: Indira Gandhi, National Centre for the Arts, ISBN: 9788120800782
6. Hotwani, Mehul & Rastogi, Priyanka (2022). "Vastu Shastra: A Vedic Approach to Architecture." *International Journal of Engineering Research & Technology* (IJERT), 11(2), ISSN: 2278-0181, DOI: 10.17577/IJERTV11IS020141
7. Purkar, Pratik P., Narad, Anjali V., & Kothalkar, Pooja (2019). "Vedic Vaastushastra: A Scientific Approach.", *Journal of Civil Engineering and Environmental Technology*, 6(1), 6–10, ISSN (Print): 2349-8404, ISSN (Online): 2349-879X
8. Narkhede, Parag G. & Chiplunkar, Tanaya M. (2024). "Symbolism and Ancient Indian Town Planning.", *History Research Journal*, 30(3), 104–110. ISSN: 0976-5425
9. Venugopal, Jayadevi (2012). "Vastu Purusha Mandala: A Human Ecological Framework for Designing Living Environments." In R. Prabhakara et al. (Eds.), *Advances in Architecture and Civil Engineering*, pp. 870–877, Bonfring, Bangalore, India.

10. Ghom, Pashmeena V. (2021). "*Scientific Rationality in Vaastu Purusha Mandala: A Case Study of Desh and Konkan Architecture.*", New Design Ideas, 5(2), 195–205.
11. Dash, Shanta & Joshi, Mahendra (2021). "*A Comparative and Critical Analysis of Application of Vastu Shastra's Concepts with Philosophy, Psychology*, Feng Shui, Seismic Design and Contemporary Architecture Design Principles: A Review.", Applied Ecology and Environmental Sciences, 9(9), 838–845, DOI: 10.12691/aees-9-9-8.

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. वास्तु-शास्त्र के अनुसार, कौन सा ब्रह्माण्डीय आरेख वास्तुकला योजना में स्थानिक संतुलन सुनिश्चित करता है?

   का पंचमहाभूत

   ख) शिवलिंग-मंडल

   ग) वास्तु-पुरुष-मंडल

   घ) ब्रह्मा-वेदी

2. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में, राजा के महल के लिए शहर के क्षेत्र का कौन सा अंश आदर्श रूप से आरक्षित होता है?

   क) एक-चतुर्थांश

   ख) एक-नवमांश

   ग) एक-षष्टमांश

   घ) एक-अष्टमांश

3. नंद्यावर्त लेआउट की मुख्य विशेषता क्या है?

   क) धनुषाकार संरचना

   ख) केंद्रीय सड़क वाला रैखिक बसा हुआ क्षेत्र

   ग) बारह द्वारों वाला समवर्तक गोलाकार डिज़ाइन

   घ) स्वस्तिक जैसा ग्रिड

4. वास्तुशास्त्र के अनुसार, अयोध्या शहर का कौन सा शहरी डिज़ाइन पैटर्न अपनाया गया था?

   क) सर्वतोभद्र

   ख) स्वस्तिक

   ग) अष्टापद

   घ) पद्मक

5. कौन सा ग्रंथ 32, 49, 64 या 81 ग्रिड जैसे स्थल लेआउट के विस्तृत मॉडल प्रदान करता है?

   क) ब्राहत-संहिता

   ख) मानसार

   ग) अर्थशास्त्र

   घ) रामायण

6. मंदिर वास्तुकला में, गर्भगृह के ऊपर ऊँचा संकुचित टॉवर किसे कहा जाता है?

   क) मंडप

   ख) शिखर

   ग) प्रारंभ

   घ) स्तंभ

7. प्राचीन भारतीय सड़क योजना के अनुसार, हाथियों के लिए बनाई गई सड़कें आदर्श रूप से कितनी चौड़ी होती थीं?

   क) 6 फीट

   ख) 12 फीट

   ग) 24 फीट

   घ) 48 फीट

8. वास्तु-शास्त्र के अनुसार, 'तकनीशियन' या 'कारीगर' कौन है, जो डिज़ाइनों को निष्पादित करता है?

   क) यजमान

   ख) स्थापति

   ग) शिल्पी

   घ) कक्षक

9. कौन सा प्राचीन शहर वर्षा जल संचयन जलाशयों का उपयोग कर उन्नत जल प्रबंधन का उदाहरण देता है?

   क) मोहनजोदड़ो

   ख) हड़प्पा

   ग) धोलावीरा

   घ) लोथल

10. वास्तु-शास्त्र में कौन सा लेआउट तटीय नगरों के लिए आदर्श रूप से डिजाइन किया गया था?

क) कर्मुका (धनुष)

ख) दंडक (दंड)

ग) स्वस्तिक

घ) पद्मक (कमल)

11. राजमहलों के मुख्य समारोहिक हॉल को क्या कहा जाता है?

क) सभा

ख) प्राकार

ग) शिखर

घ) विमान

12. वास्तु-शास्त्र में, समरांगणसूत्रधारा में कितने एक-कक्षीय घरों का वर्णन किया गया है?

क) 72

ख) 52

ग) 108

घ) 36

13. वास्तु-शास्त्र के अनुसार, निर्माण प्रक्रिया में वास्तोषपति की भूमिका क्या है?

क) कारीगरों की निगरानी करना

ख) अनुष्ठान और आशीर्वाद देना

ग) भवन अनुपात मापना

घ) भूमि का चयन करना

14. स्वस्तिक लेआउट में कितने प्रमुख विभाग या कोश होते हैं?

क) 49

ख) 64

ग) 81

घ) 108

15. प्राचीन शास्त्रों के अनुसार, एक राजमार्ग (राजा-मार्ग) की आदर्श चौड़ाई क्या थी?

क) 24 फीट

ख) 36 फीट

ग) 54 फीट

घ) 72 फीट

16. वास्तु-पुरुष का सिर किस दिशा में स्थित होता है, ऐसा माना जाता है?

क) दक्षिण-पश्चिम

ख) उत्तर-पूर्व

ग) दक्षिण-पूर्व

घ) उत्तर-पश्चिम

17. नीचे में से कौन प्राचीन मंदिर निर्माण में मास्टर वास्तुकार के रूप में वर्णित है?

क) विश्वकर्मा

ख) शुक्र

ग) वराहमिहिर

घ) कौटिल्य

18. द्रविड़ शैली की मंदिर वास्तुकला मुख्य रूप से कहाँ पाई जाती है?

क) पश्चिमी भारत

ख) उत्तरी भारत

ग) दक्षिणी भारत

घ) पूर्वी भारत

19. किस सभ्यता में बड़े सार्वजनिक अनाज भंडार और ग्रिड लेआउट पाए गए थे?

क) मौर्य

ख) सिंधु-सरस्वती

ग) गुप्त

घ) मुग़ल

20. मंदिर के निर्माण के लिए जिस ऊँचे मंच पर उसे रखा जाता है, उसे क्या कहा जाता है?

क) प्रारंभ

ख) मंडप

ग) अधिष्ठान

घ) वर्गकी

21. मंदिर वास्तुकला में, कौन सा संरचना देवता को आश्रय देती है?

क) मंडप

ख) गर्भगृह

ग) शिखर

घ) प्राकार

22. वास्तु-शास्त्र में, लकड़ी के काम के लिए जिम्मेदार कारीगर को क्या कहा जाता है?

क) कक्षक

ख) शिल्पी

ग) सूत्रग्रहिण

घ) वर्गकी

23. किस लेआउट में शहर का रूप एक बिस्तर या पलंग जैसा होता है?

क) पद्मक

ख) सर्वतोभद्र

ग) प्रारंभ

घ) स्वस्तिक

24. वास्तु-शास्त्र में, समृद्धि किस दिशा से संबंधित मानी जाती है?

क) उत्तर

ख) दक्षिण

ग) पूर्व

घ) पश्चिम

25. कौटिल्य के अनुसार, एक अच्छी योजना वाले शहर में कितने द्वार होने चाहिए?

क) 8

ख) 12

ग) 16

घ) 10

26. वास्तु-पुरुष-मंडल का पवित्र केंद्र बिंदु क्या कहलाता है?

क) आदित्यस्थल

ख) सोमस्थल

ग) ब्रह्मस्थल

घ) रुद्रस्थल

27. अर्थशास्त्र में, मंदिरों को शहर के किस भाग में रखने की सिफारिश की गई है?

क) पूर्वी भाग

ख) पश्चिमी भाग

ग) केंद्र

घ) दक्षिणी भाग

28. दंडक लेआउट किससे मिलता-जुलता है?

क) एक सीधी रेखा

ख) एक वृत्त

ग) एक स्वस्तिक

घ) एक धनुष

29. समरांगणसूत्रधारा में कितने प्रकार की सड़कें सुझाई गई हैं?

क) 8

ख) 16

ग) 24

घ) 34

30. प्राचीन भारतीय नगर योजना में, किलों के चारों ओर क्या था?
   क) केवल ऊँची दीवारें
   ख) खाई
   ग) जंगल
   घ) प्रहरी मीनारें

31. सर्वतोभद्र डिज़ाइन के मुख्य प्रवेश द्वार किस दिशा में स्थित होते हैं?
   क) मुख्य दिशाओं में
   ख) विकर्ण दिशाओं में
   ग) केवल पूर्व-पश्चिम
   घ) यादृच्छिक दिशाओं में

32. पद्मका लेआउट की मुख्य विशेषता क्या थी?
   क) कमल जैसा संरचना
   ख) वर्गाकार ग्रिड
   ग) धनुषाकार डिज़ाइन
   घ) विकर्ण सड़कें

33. वास्तु-शास्त्र के किस तत्व से उपयुक्त भूमि का चयन संबंधित है?
   क) अलंकरण
   ख) भूमि
   ग) शयन
   घ) यान

34. ब्राहत-संहिता की रचना किसने की थी?
   क) कौटिल्य
   ख) विश्वकर्मा
   ग) वराहमिहिर
   घ) वाल्मीकि

35. राजमहल को शहर के किस दिशा में स्थित किया जाता था?
   क) पूर्व
   ख) पश्चिम
   ग) उत्तर
   घ) दक्षिण

36. मंदिर निर्माण में, एंटेबलचर को क्या कहा जाता है?
   क) शिखर
   ख) प्रारंभ
   ग) स्तंभ
   घ) मंडप

37. वास्तु-शास्त्र के अनुसार, एक सामान्य घर को आदर्श रूप से कितने वर्षों तक टिकना चाहिए?
   क) 200 साल
   ख) 500 साल
   ग) 1000 साल
   घ) 100 साल

38. कक्षक का विशेषज्ञ किस कार्य में होता है?
   क) मूर्तियों का शिल्प
   ख) लकड़ी का काम
   ग) पत्थर का काम
   घ) दीवार चित्रकला

39. जयपुर की नगर योजना प्रणाली किस प्राचीन मॉडल पर आधारित है?
   क) नंद्यावर्त
   ख) कर्मुका
   ग) प्रारंभ
   घ) दंडक

40. मंदिर निर्माण में, शिखर के ऊपर जो मुकुट या फिनियल होता है, उसे क्या कहा जाता है?

क) मंडप

ख) स्तंभ

ग) प्रारंभ

घ) स्तूप

41. अष्टपद लेआउट किस आधुनिक संरचना जैसा होता है?

क) षटकोण

ख) शतरंज का बोर्ड

ग) तारा

घ) वृत्त

42. निर्माण की शुरुआत से पहले भूमिपूजन कौन करता था?

क) शिल्पी

ख) यजमान

ग) सूत्रग्रहिण

घ) वर्गकी

43. किस साहित्यिक कृति में लंका की वास्तुकला की भव्यता का वर्णन है?

क) महाभारत

ख) ब्राहत-संहिता

ग) रामायण

घ) मानसार

44. अर्थशास्त्र के अनुसार, जंगलों की ओर जाने वाली सड़कों की चौड़ाई कितनी होनी चाहिए?

क) 54 फीट

ख) 48 फीट

ग) 24 फीट

घ) 6 फीट

45. वास्तु-शास्त्र के किस तत्व से आंतरिक सजावट संबंधित है?

क) पादविन्यास

ख) भूमि

ग) वास्तोष्पति

घ) अलंकरण

46. निर्माण के दौरान अनुपात मापने का मुख्य जिम्मेदार कौन होता है?

क) कक्षक

ख) शिल्पी

ग) सूत्रग्रहिण

घ) वर्गकी

47. स्वस्तिक लेआउट में, एक जैन मंदिर सामान्यतः किस चौथाई में रखा जाता है?

क) उत्तर-पश्चिम

ख) दक्षिण-पश्चिम

ग) दक्षिण-पूर्व

घ) उत्तर-पूर्व

48. धोलावीरा में, कौन सा विशेष बुनियादी ढांचा शहरी दृष्टिकोण को उजागर करता है?

क) पत्थर के पुल

ख) स्तूप

ग) लकड़ी के महल

घ) जलाशय

49. ग्रीक इतिहासकार जिन्होंने पाटलिपुत्र की वास्तुकला का वर्णन किया था, वह थे:

क) मेगस्थनीज

ख) हेरोडोटस

ग) प्लिनी

घ) टॉलमी

50. वास्तु-शास्त्र में, "प्रासाद" शब्द मुख्य रूप से किसका संकेत करता है?

क) सार्वजनिक पुस्तकालय

ख) नागरिक केंद्र

ग) मंदिर या महल

घ) बाज़ार

51. राजसी सड़कें सामान्यतः किस दिशा में संरेखित होती थीं?

क) मुख्य दिशाओं में

ख) नदियों के प्रवाह के साथ

ग) प्राकृतिक ढलानों के साथ

घ) प्रशासनिक सीमाओं के साथ

52. वास्तु-शास्त्र में, परिवहन और वाहनों का क्या तत्व है?

क) शयन

ख) यान

ग) अलंकरण

घ) भूमि

53. वास्तु के अनुसार, सड़कों की अभिविन्यास का मूल सिद्धांत क्या है?

क) कलात्मक सामंजस्य

ख) आर्थिक लाभ

ग) सूर्य और वायु संरेखण

घ) सौंदर्यात्मक अनुपात

54. वह संरचना जो गर्भगृह को घेरती है और परिक्रमा करने का अवसर देती है, क्या कहलाती है?

क) प्राकार

ख) मंडप

ग) शिखर

घ) स्तंभ

55. प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वर्णित वृत्ताकार बसावट है:

क) सर्वतोभद्र

ख) स्वस्तिक

ग) पद्मक

घ) नंद्यावर्त

56. सर्वतोभद्र मॉडल में, महत्वपूर्ण सार्वजनिक संरचनाएँ कहां रखी जाती हैं?

क) कोनों पर

ख) केंद्र में

ग) बाहरी रिंग में

घ) मुख्य सड़कों पर

57. मानसार के अनुसार, सर्वतोभद्र लेआउट में कितनी मुख्य सड़कें परस्पर मिलती हैं?

क) 2

ख) 4

ग) 5

घ) 6

58. शांकायन-गृह्य-सूत्र मुख्य रूप से किससे संबंधित है?

क) भवन निर्माण से संबंधित अनुष्ठान

ख) सैन्य किलाबंदी

ग) कृषि संधियाँ

घ) प्रतिमा शिल्प

59. किस सभ्यता में शहरों की योजना में मानकीकृत ईंट माप देखने को मिली?

क) वेदिक सभ्यता

ख) मौर्य सभ्यता

ग) सिंधु-स Saraswati सभ्यता

घ) गुप्त सभ्यता

60. अर्थशास्त्र के अनुसार, मवेशियों के लिए सड़क की अनुमानित चौड़ाई कितनी होनी चाहिए?

क) 3 फीट

ख) 6 फीट

ग) 12 फीट

घ) 24 फीट

61. मंदिर में प्रवेश मंडप को क्या कहा जाता है?

क) मुख-मंडप

ख) गर्भगृह

ग) शिखर

घ) प्राकार

62. प्राचीन भारतीय निर्माण में पत्थर चिपकाने वाला पदार्थ किस ग्रंथ में वर्णित है?

क) मानसार

ख) ब्राहत-संहिता

ग) रामायण

घ) अर्थशास्त्र

63. मंदिर की प्रतिमाओं में देवताओं के अनुपात का विवरण किस ग्रंथ में है?

क) अग्नि पुराण

ख) अर्थशास्त्र

ग) मानसार

घ) ब्राहत-संहिता

64. उत्तर भारत में मंदिरों का प्रमुख वास्तुशिल्प शैली क्या है?

क) द्रविड़

ख) वेसरा

ग) नागर

घ) गांधार

65. कर्मुका लेआउट में, नगर का आकार किसके समान होता है?

क) स्वस्तिक

ख) धनुष

ग) पद्म

घ) staff

66. मोहनजोदड़ो में ग्रेट बाथ के लिए कौन सा सामग्री बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया था?

क) ईंट और जिप्सम

ख) लकड़ी

ग) पत्थर

घ) लोहे की प्लेट

67. आदर्श मंदिर योजना किस ज्यामितीय रूप पर आधारित होती है?

क) त्रिकोण

ख) षटकोण

ग) वर्ग

घ) आयत

68. किस शब्द से बहु-मंजिला मंदिर के गोल भाग का संकेत मिलता है?

क) प्रास्तर

ख) शिखर

ग) मंडप

घ) स्तंभ

69. मंदिर का सबसे पवित्र स्थान क्या कहलाता है?

क) मुख-मंडप

ख) शिखर

ग) गर्भगृह

घ) प्राकार

70. वास्तुकला और योजना का विज्ञान सामान्यतः क्या कहलाता है?

क) यान-शास्त्र

ख) वास्तु-शास्त्र

ग) शिल्प-शास्त्र

घ) शिखर-शास्त्र

71. वास्तु-शास्त्र के अनुसार, किलेबंदी वाले नगरों में सामान्यतः कितने मुख्य द्वार होते थे?

क) 2

ख) 4

ग) 6

घ) 8

72. प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, गांवों को प्रशासनिक इकाइयों के रूप में कितने गांवों का समूह माना जाता था?

क) 10

ख) 50

ग) 100

घ) 200

73. मंदिर निर्माण के घटक में कौन सा संरचनात्मक स्तंभ को संदर्भित करता है?

क) प्रास्तर

ख) स्तूप

ग) शिखर

घ) स्तंभ

74. वास्तु-मंडल में स्थित प्रतीकात्मक ब्रह्मांडीय आकृति को क्या कहा जाता है?

क) विश्वकर्मा

ख) ब्रह्मा

ग) वास्तु-पुरुष

घ) स्थापत्य

75. किस प्राचीन योजना में 81 वर्गों की योजना का उल्लेख है?

क) प्रास्तर

ख) दंडक

ग) सर्वतोभद्र

घ) स्वस्तिक

76. मानसार के अनुसार, स्थल योजनाओं के लिए कितने मॉडल अनुशंसित हैं?

क) 16

ख) 24

ग) 32

घ) 48

77. टक्षक मुख्य रूप से किस कार्य से संबंधित होता है?

क) ईंट कारीगरी

ख) चित्रकला

ग) लकड़ी का काम

घ) धातु शिल्प

78. वास्तु-शास्त्र में भूमि का क्या अर्थ है?

क) परिवहन

ख) भूमि

ग) सजावट

घ) आंतरिक सजावट

79. अर्थशास्त्र में आदर्श नगर योजनाओं का वर्णन करने वाले निम्नलिखित में से कौन थे?

क) कौटिल्य

ख) मनु

ग) वराहमिहिर

घ) विश्वकर्मा

80. पद्मका मॉडल में, नगर के आकार की प्रेरणा किससे ली गई थी?

क) पलंग

ख) staff

ग) धनुष

घ) पद्म

81. मंदिर का ऊपरी हिस्सा जिसमें छत की बीम शामिल होती है, क्या कहलाता है?

क) गर्भगृह

ख) शिखर

ग) प्रास्तर

घ) स्तंभ

82. स्वस्तिक लेआउट में, प्रमुख दिशाओं के अलावा सड़कों की दिशा किस प्रकार होती है?

क) केवल पूर्व-पश्चिम

ख) आड़ा-तिरछा

ग) केवल उत्तर-दक्षिण

घ) केवल मंदिर की ओर

83. किस ग्रंथ में मंदिर योजना और मूर्ति स्थापना के नियमों का वर्णन किया गया है?

क) मानसार

ख) अर्थशास्त्र

ग) ब्राहत-संहिता

घ) रामायण

84. मोहनजोदड़ो में मिली बड़ी सार्वजनिक जलाशय को क्या कहा जाता है?

क) सार्वजनिक जलाशय

ख) ग्रेट बाथ

ग) राजा का कुंड

घ) पवित्र बावड़ी

85. अर्थशास्त्र के अनुसार, रथों के लिए सड़कों की अनुशंसित चौड़ाई क्या है?

क) 7.5 फीट

ख) 6 फीट

ग) 3 फीट

घ) 12 फीट

86. वास्तु-शास्त्र में, निर्माण से पहले पहला अनुष्ठान क्या होता है?

क) भूमि-पूजन

ख) वास्तु-शांति

ग) गृहारंभ

घ) गृहप्रवेश

87. स्थापत्यकार को कितने प्रकार की शिल्पकला में महारत होनी चाहिए?

क) चार

ख) छह

ग) आठ

घ) दस

88. मेगस्थनीज के अनुसार, किस शहर में 564 मीनारें और 64 द्वार थे?

क) हड़प्पा

ख) मोहनजोदड़ो

ग) पाटलिपुत्र

घ) लोथल

89. धोलावीरा के नगर नियोजन में, शहर को कितने अलग-अलग हिस्सों में विभाजित किया गया था?

क) 3

ख) 2

ग) 4

घ) 5

90. वास्तु-शास्त्र में, किस तत्व का संबंध शयन व्यवस्था से है?

क) शयन

ख) भूमि

ग) प्रासाद

घ) यान

91. किस शहर का नियोजन आधुनिक समय में प्रास्तर लेआउट का उदाहरण है?

क) चंडीगढ़

ख) जयपुर

ग) मुंबई

घ) दिल्ली

92. नए घर में प्रवेश का पहला अनुष्ठान क्या कहलाता है?

क) गृहप्रवेश

ख) वास्तु-पूजन

ग) शयन

घ) स्थापत्य

93. स्वस्तिक लेआउट रक्षा के दृष्टिकोण से किस प्रकार का लाभ प्रदान करता है?

क) केंद्रीय मंदिर

ख) मजबूत किलेबंदी

ग) चारों द्वारों की रक्षा

घ) गोलाकार क्षेत्रों में विभाजन

94. मयामतम मुख्य रूप से किस विषय पर एक ग्रंथ है?

क) युद्ध

ख) वास्तुकला

ग) साहित्य

घ) काव्य

95. नागर शैली के मंदिरों में, मीनार किस प्रकार से उभरती है?

क) गुंबद जैसे

ख) वक्र रेखीय

ग) पिरामिड के आकार की

घ) समतल

96. सर्वतोभद्र मॉडल में, जनसंख्या घनत्व कहाँ सबसे अधिक होता है?

क) शहर की दीवारों पर

ख) केंद्रीय खुले स्थान में

ग) बाहरी परिधियों में

घ) मुख्य मंदिरों के पास

97. अर्थशास्त्र के अनुसार, पशुओं की आवाजाही के लिए सड़कों की चौड़ाई कितनी होनी चाहिए?

क) 3 फीट

ख) 6 फीट

ग) 12 फीट

घ) 24 फीट

98. किस प्रकार की मंदिर योजना में सड़कों द्वारा केंद्र को सीधे पार करने से बचा जाता है?

क) दंडक

ख) कर्मुका

ग) पद्मका

घ) प्रास्तर

99. रामायण के अनुसार, अयोध्या की डिजाइन किस मॉडल के समान थी?

क) अष्टापद मॉडल

ख) पद्मका मॉडल

ग) कर्मुका मॉडल

घ) सर्वतोभद्र मॉडल

100. वास्तु-पुरुष-मंडल का प्रमुख पहलू क्या था?

क) कला सौंदर्य

ख) सौर कैलेंडर

ग) सामंजस्यपूर्ण ब्रह्मांडीय संरेखण

घ) रक्षात्मक वास्तुकला

उत्तरदर्शिका

1. (ग)	26. (ग)	51. (क)	76. (ग)
2. (ख)	27. (ग)	52. (ख)	77. (ग)
3. (ग)	28. (क)	53. (ग)	78. (ख)
4. (ग)	29. (घ)	54. (ख)	79. (क)
5. (ख)	30. (ग)	55. (घ)	80. (घ)
6. (ख)	31. (क)	56. (क)	81. (ग)
7. (ख)	32. (क)	57. (ख)	82. (ग)
8. (ग)	33. (ख)	58. (क)	83. (ग)
9. (ग)	34. (ग)	59. (ग)	84. (ख)
10. (क)	35. (ख)	60. (ख)	85. (क)
11. (क)	36. (ख)	61. (क)	86. (क)
12. (ग)	37. (क)	62. (ख)	87. (ग)
13. (ख)	38. (ख)	63. (घ)	88. (घ)
14. (ख)	39. (ग)	64. (ग)	89. (क)
15. (ग)	40. (ग)	65. (ख)	90. (ख)
16. (ग)	41. (घ)	66. (ग)	91. (ख)
17. (घ)	42. (ख)	67. (घ)	92. (क)
18. (ख)	43. (ग)	68. (क)	93. (घ)
19. (ख)	44. (क)	69. (ग)	94. (ख)
20. (ग)	45. (घ)	70. (ख)	95. (क)
21. (ख)	46. (ग)	71. (ब)	96. (घ)
22. (क)	47. (ख)	72. (क)	97. (ख)
23. (ग)	48. (घ)	73. (घ)	98. (ग)
24. (क)	49. (क)	74. (ग)	99. (क)
25. (ख)	50. (ग)	75. (घ)	100. (ग)

पुस्तक के विषय में

'नगर नियोजन और भारतीय वास्तुकला' पुस्तक, वास्तुशास्त्र-निर्माण और अभिकल्प की प्राचीन विज्ञान प्रणाली - के दृष्टिकोण से भारत की स्थापत्य परंपरा का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह ग्रंथ प्राचीन साहित्यिक स्रोतों और परंपरागत मॉडल्स के आधार पर वास्तुपुरुष मण्डल की प्रतीकात्मक संरचना तथा वास्तुशास्त्र के आठ अंगों का विवरण करता है, जिसमें यजमान, स्थापत्य, शिल्पी, भूमि, पादविन्यास, सामग्री, वास्तुपति और अलंकरण जैसे पहलुओं की व्याख्या की गई है। पुस्तक में प्राचीन भारतीय नगर नियोजन की विभिन्न रूपरेखाएँ - जैसे दण्डक, स्वास्तिक आदि - को स्पष्ट करते हुए सड़क व्यवस्था, आवासीय निर्माण, सार्वजनिक ढाँचे, तथा राजमहलों और मंदिरों के विस्तृत विन्यास की चर्चा की गई है। मंदिर वास्तुकला और मूर्ति-विज्ञान की समृद्ध जानकारी के साथ यह पुस्तक पाठकों को प्राचीन भारत के नगरीय एवं स्थापत्य विकास में निहित वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों को समझने में सहायक सिद्ध होती है।

सहयोग से :

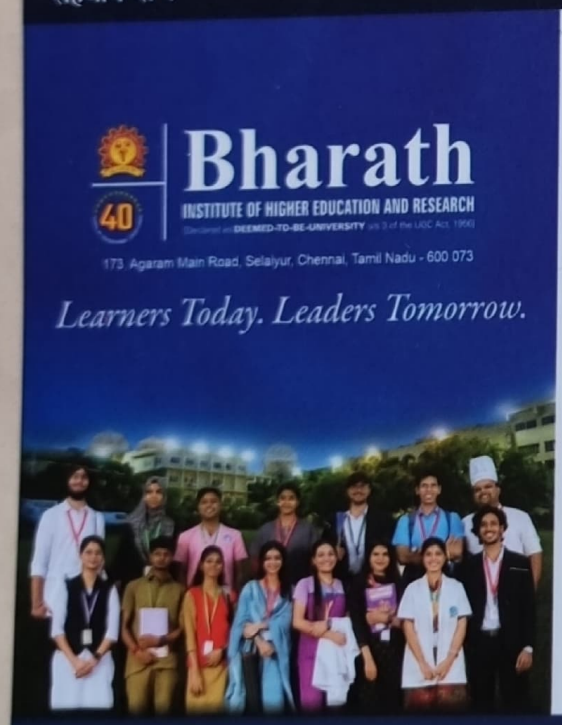

Bharath
INSTITUTE OF HIGHER EDUCATION AND RESEARCH
173, Agaram Main Road, Selaiyur, Chennai, Tamil Nadu - 600 073
Learners Today. Leaders Tomorrow.

500+ COLLABORATIONS MOU'S
75+ COUNTRIES & REGIONS ALUMNI NETWORK
300+ FACULTY & STUDENT EXCHANGE COLLABORATIONS
70+ FORMS OF GLOBAL RESEARCH PARTNERSHIPS
250+ INTERNATIONAL FACULTY FROM 50+ COUNTRIES AND REGIONS
20000+ PUBLICATIONS
75+ INTER DISCIPLINARY RESEARCH CENTRES
6 RESEARCH CAPACITY BUILDING INSTITUTES

1st Private University in India obtained international accrediations from ABET, USA for 4 programs in the year 2018
50+ NATIONAL & INTERNATIONAL AWARDS & RANKINGS

ENGINEERING & TECHNOLOGY | ARTS & SCIENCE | MEDICAL | MANAGEMENT ARCHITECTURE | ALLIED HEALTH SCIENCES LAW | CATERING & HOTEL MANAGEMENT | AGRICULTURE PHARMACY | NURSING

Engineering & Law : 044 - 61116299 / 61116247
Arts & Science : 044 - 61116399 / 044 - 61116377
Allied Health Sciences & Nursing : 044 - 61116215

ADMISSION HELPLINE
1800-419-1441
For more details please visit
www.bharathuniv.ac.in

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान
Vidya Bharati Uchcha Shiksha Sansthan
H-107a, Sector-12, Noida,
Gautam Buddha Nagar, U.P. 201301
Contact Us : 0120-4338616, 9999694251

किताबवाले
7/31, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
वेबसाईट : www.kitabwale.com
ईमेल : kitabwale@gmail.com

ISBN 978-93-49531-88-8
9 789349 531888